परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जैनागम स्तोक वारिधि

(छठी कक्षा)

सम्पादक

धर्मचन्द जैन

प्रकाशक

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

(तत्त्वावधान–अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)

सामायिक स्वाध्याय भवन

प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर–342003 (राज.)

फोन : 0291-2630490, 2636763, WhatsApp No. 7610953735

email: shikshanboardjodhpur@gmail.com

website : www.jainratnaboard.com

जैनागम स्तोक–वारिधि
(छठी कक्षा)

सम्पादक
धर्मचन्द जैन

प्रकाशक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड
नेहरू पार्क, जोधपुर– 342 003 (राज.)
फोन नं. : 0291–2630490

मूल्य : 10 रुपये

प्रतियाँ : 1000

चतुर्थ संस्करण : अप्रेल, 2024

कम्प्यूटर टाईप सेटिंग एवं मुद्रकः
शांता प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स
गोल बिल्डिंग, सरदारपुरा
जोधपुर
फोन : 94141–30313

प्रकाशकीय

थोकड़ों का जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। ये हमारे आध्यात्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि में सहायक बनते हैं। इनके अध्ययन से हमें आगमों के अनेक गूढ़ रहस्यों एवं सार तत्त्वों का परिचय प्राप्त होता है। हमारा मन सावद्य-योग सेवानिवृत्त होता है तथा जिनेश्वर भगवन्तों द्वारा प्ररूपित धर्म तत्त्व पर श्रद्धा उत्पन्न होती है, जिससे श्रद्धा में विशुद्धता बढ़ती है।

तत्त्वज्ञान हेतु यद्यपि आगमों में विशद् विवेचन किया गया है, परन्तु आगमों का अध्ययन करना तथा उसे समझना अधिकांश लोगों के लिए अत्यधिक श्रम-साध्य एवं समय-साध्य है। अतः पूर्वाचार्यों ने अनुभव किया कि आगमों में यत्र-तत्र बिखरे हुए महत्त्वपूर्ण तत्त्वज्ञान को थोकड़ों के रूप में प्रस्तुत किया जाय।

आचार्य भगवन्तों एवं ज्ञानी गुरु भगवन्तों का हम पर असीम उपकार है कि उन्होंने तत्त्वज्ञान को थोकड़ों के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर नैतिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान व संस्कारों के वर्धापन में सन् 2001 से सन्नद्ध हैं। तत्त्वज्ञान को थोकड़ों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने हेतु शिक्षण बोर्ड द्वारा आचार्य श्री हस्ती जन्म शताब्दी अध्यात्म-चेतना वर्ष के उपलक्ष्य में सन् 2011 में ''जैनागम स्तोक वारिधि'' पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। कक्षा 1 से 12 तक के पाठ्यक्रम से सम्बन्धित थोकड़ों की अलग-अलग पुस्तकें शिक्षण बोर्ड की ओर से प्रकाशित की जा चुकी हैं।

युगमनीषी, युगप्रभावक, युगपुरुष, सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री 1008 श्री हस्तीमल जी म. सा., व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, प्रवचन प्रभाकर, आगम रत्नाकर, आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान अध्यवसायी, भावी आचार्यप्रवर श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. आदि सन्त एवं महासती मण्डल की प्रेरणा को थोकड़ों की परीक्षा के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने हेतु शिक्षण बोर्ड कृत संकल्प है। पाठ्यक्रमानुसार सभी थोकड़े एक ही पुस्तक में उपलब्ध हो, ताकि परीक्षार्थियों एवं साधकों को अध्ययन करने में सुगमता रहे, इसी लक्ष्य से यह पुस्तक प्रकाशित की जा रही है।

पुस्तक प्रकाशन में सन् 2005 से श्रद्धानिष्ठ-धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सरोजा बाईजी मूथा (धर्मपत्नी सुश्रावक स्वर्गीय श्री सुगनचन्दजी मूथा) बेंगलौर (मरूधरा में बलून्दा) ने अपने पतिदेव की धार्मिक भावनाओं का आदर करते हुए जो महत्त्वपूर्ण आर्थिक सहयोग प्रदान किया है, उसके लिए शिक्षण बोर्ड उनके एवं उनके सभी परिवारजनों के प्रति हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करता है।

प्रस्तुत पुस्तक का संकलन-सम्पादन एवं संशोधन श्री धर्मचन्द जी जैन-रजिस्ट्रार ने किया है तथा टाईप सेटिंग का कार्य शान्ता प्रिण्टर्स, जोधपुर में श्री लायक अली जी ने किया है।

निवेदक

अशोक बाफना — संयोजक

आकाश चौपड़ा — सचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

सम्पादकीय

अरिहन्त भगवन्तों द्वारा प्ररूपित जैन धर्म पूर्णतः प्रामाणिक, आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक धर्म है। क्योंकि अरिहन्त भगवन्त सर्वज्ञ-सर्वदर्शी होने के साथ पूर्ण वीतरागी भी होते हैं। आध्यात्मिक जीवन की अनमोल धरोहर जैनागम है। जैनागम अत्यधिक विशाल एवं गूढार्थ लिए हुए हैं। उन्हें पढ़ना, समझना एवं हृदयंगम करना अत्यधिक श्रमसाध्य हैं। पूर्वाचार्यों ने हम पर महती कृपा कर आगमों का संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित सारांश थोकड़ों के रूप में प्रदान किया है। ये थोकड़े जैन तत्त्व ज्ञान को समृद्ध बनाने में अत्यधिक सहायक बनते हैं।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर द्वारा तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार एवं तत्त्वमय जीवन जीने की प्रेरणा पाने हेतु जैनागम स्तोक वारिधि पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया है। जिसे बारह कक्षाओं में विभाजित किया गया है। प्रत्येक कक्षा की पाठ्यक्रमानुसार स्वतन्त्र पुस्तक शिक्षण बोर्ड द्वारा प्रकाशित की गई है। **छठी कक्षा** की प्रस्तुत पुस्तक में निम्नांकित पाँच थोकड़े दिये जा रहे हैं :-

1. **अबाधाकाल का थोकड़ा**- अनादिकालीन कर्मजंजीरों से जकड़ी हुई आत्मा की कर्म-स्थिति की जानकारी तथा कर्म बन्धने के बाद कितने समय तक बाधा नहीं देता, उसकी जानकारी इस थोकड़े में दी गई है। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, असन्नी पंचेन्द्रिय तथा सन्नी पंचेन्द्रिय जीव कौन-कौन से कर्म कितनी कितनी जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति के बांधते हैं, इसकी विस्तार पूर्वक जानकारी इस थोकड़े से आसानी से प्राप्त की जा सकती है।

2. **98 बोल का बासठिया**- प्रज्ञापना सूत्र के तीसरे पद के आधार पर 98 बोलों की अल्पबहुत्व एवं जीव के भेद-14, गुणस्थान-14, योग-15, उपयोग-12, लेश्या-6 तथा एक वह बोल जिस पर ये घटित किये जाते हैं, इस प्रकार कुल 62 भेद (बासठिया) की जानकारी दी गई है। इस थोकड़े से 98 बोलों में कौन-सा बोल किससे कितना कम है, अधिक है, इसकी जानकारी भी प्राप्त हो जाती है।

3. प्रज्ञापना सूत्र के छठे पद में समस्त संसारी जीवों का विरह बतलाया गया है। कोई जीव किसी स्थान पर अधिकतम कितने अन्तर से उत्पन्न होता है, उसे विरह कहते हैं। विरह द्वार में 24 दण्डक के जीवों के साथ ही सिद्धों का, 64 इन्द्रों का, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव का, सूर्यग्रहण का, चन्द्रग्रहण का, नवीन साधु, श्रावक तथा सम्यक्दृष्टि का विरह भी बतलाया गया है।

4. **दिशाणुवाई का थोकड़ा**- प्रज्ञापना सूत्र के तीसरे पद के आधार से प्रस्तुत इस थोकड़े में 18 द्रव्य एवं भाव दिशाओं के भेद बतलाते हुए पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण इन चार दिशाओं की अपेक्षा से जीवों की अल्पबहुत्व बतलाई है। दस प्रश्नों के माध्यम से संसारी जीवों की दिशाओं की अपेक्षा अल्पबहुत्व की दी गई जानकारी उपयोगी है।

5. **छःकाय का थोकड़ा**-पृथ्वीकायादि छह काय के जीवों की जानकारी इस थोकड़े में दी गई है। छह कायों के आगमिक नाम, गोत्र, स्वभाव, संस्थान, एक मुहूर्त में भवों की संख्या, उत्कृष्ट स्थिति, योनियों एवं कुलों की संख्या इस प्रकार 9 द्वारों से विवेचना की गई है। इस थोकड़े में यह स्पष्ट किया है कि औदारिक के दस ही दण्डकों में क्षुल्लक भव (256 आवलिका प्रमाण) हो सकते हैं। एक मुहूर्त्त में 65536 भव केवल सूक्ष्म वनस्पति में ही नहीं, अपितु पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु,

वनस्पति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय में भी जीवों जघन्य स्थिति के हो सकते हैं। पंचेन्द्रिय जीवों में एक मुहूर्त्त में लगातार 8 भव जघन्य स्थिति के हो सकते हैं।

परीक्षार्थियों एवं तत्त्व ज्ञान के रसिक अन्य भाई-बहिनों को थोकड़ों का रहस्य समझने में सुगमता रहे, इसके लिए थोकड़े के साथ महत्त्वपूर्ण टिप्पणी के रूप में ज्ञातव्य भी दिये गये हैं। याद करने में सुविधा रहे, इस दृष्टि से अबाधा काल का थोकड़ा, विरह द्वार, 98 बोल का बासठिया, 6 काय का थोकड़ा को चार्ट रूप में प्रस्तुत किया गया है।

विश्वास है तत्त्वज्ञान के जिज्ञासु भाई-बहिन इन थोकड़ों को सीखकर, समझकर, परीक्षा में भाग लेकर, अपने द्वारा सीखे गये ज्ञान का मूल्यांकन करेंगे। साथ ही अपनी जानकारी को जीवन बनाते हुए अपने-आपको कृतकृत्य कर सकेंगे।

धर्मचन्द जैन
रजिस्ट्रार

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

निदेशक
नरपतराज चौपड़ा
जोधपुर, 94604–22134

परामर्शदाता
नवरतन डागा
चैन्नई, 98280–32215

संयोजक
अशोक बाफना
चैन्नई, 94442–70145

सह–संयोजक
प्रशान्त पारख
जलगांव, 94222–82501

सचिव
आकाश चौपड़ा
जोधपुर 94130–33718

सह–सचिव
महेन्द्र डी. बाफना
जलगांव 99131–29953

सह–सचिव
कुशल बाफना
जोधपुर 81188–30562

कोषाध्यक्ष
गौतम जीरावला
जोधपुर 94604–80487

रजिस्ट्रार
धर्मचन्द जैन
जोधपुर 93515–89694

जैनागम स्तोक वारिधि

(छठी कक्षा का पाठ्यक्रम)

	निर्धारित अंक
अबाधा काल का थोकड़ा	40
98 बोल का बासठिया	25
विरह द्वार	15
दिशाणुवाई	10
छह काय का थोकड़ा	10
कुल अंक	100

प्रश्न–पत्र का प्रस्तावित प्रारूप

1.	बहुविकल्पात्मक प्रश्न	15 अंक	15 प्रश्न
2.	हाँ/नहीं के प्रश्न	15 अंक	15 प्रश्न
3.	जोड़ियाँ मिलान	15 अंक	15 प्रश्न
4.	मुझे पहिचानो	15 अंक	15 प्रश्न
5.	एक-दो पंक्ति में उत्तर	16 अंक	08 प्रश्न
6.	तीन-चार पंक्तियों में उत्तर	24 अंक	08 प्रश्न
	कुल	100 अंक	76 प्रश्न

अनुक्रमणिका

	पृष्ठ संख्या
अबाधा काल का थोकड़ा	1-45
98 बोल का बासठिया	46-52
विरह द्वार	53-61
दिशाणुवाई	62-68
छह काय का थोकड़ा	69-70
नमूना प्रश्न-पत्र	71-80
आवेदन-पत्र	81
पुरस्कार विवरण	82

अबाधाकाल के थोकड़े सम्बन्धी ज्ञातव्य :-

1. **अबाधाकाल** – कर्म बंधने के बाद अमुक समय तक किसी भी प्रकार के फल न देने की अवस्था को अबाधाकाल कहते हैं। आयु कर्म को छोड़कर शेष सात कर्मों में यह सामान्य नियम है कि मिथ्यात्व मोहनीय के बन्ध के आधार से अन्य कर्म व उनकी प्रकृतियों का बन्ध होता है। मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति का बंध होने पर आयु को छोड़कर शेष सभी कर्मों का भी उत्कृष्ट स्थिति बंध होता है तथा ज्ञानावरणीय आदि छः कर्मों में से किसी एक की उत्कृष्ट स्थिति बंधने पर मोहनीय कर्म आदि शेष कर्मों की स्थिति उत्कृष्ट बंधने की भजना है।
2. मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का एकेन्द्रिय 1 सागर का, बेइन्द्रिय 25 सागर का, तेइन्द्रिय 50 सागर का, चौरेन्द्रिय 100 सागर का, असंज्ञी पंचेन्द्रिय 1000 सागर का तथा सन्नी पंचेन्द्रिय 70 कोटाकोटि सागरोपम का उत्कृष्ट बन्ध करते हैं।
3. एकेन्द्रिय से असन्नी पंचेन्द्रिय तक में जघन्य व उत्कृष्ट बन्ध में पल्योपम के असंख्यातवें भाग का अन्तर रहता है। अर्थात् जघन्य बन्ध, उत्कृष्ट बन्ध की अपेक्षा पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम होता है।
4. सात कर्मों में प्रकृतियों के स्थिति बन्ध को समझने का आसान तरीका यह है कि- जिस प्रकृति का जितना उत्कृष्ट बन्ध है, उसमें मिथ्यात्व मोहनीय की उत्कृष्ट स्थिति का भाग देने पर जो स्थिति आती है, वही उसका उत्कृष्ट स्थिति बन्ध है। जैसे- एकेन्द्रिय जीव में ज्ञानावरणीय कर्म का स्थिति बन्ध जानना है तो ज्ञानावरणीय की उत्कृष्ट स्थिति 30 कोटाकोटि सागर में मिथ्यात्व मोहनीय की उत्कृष्ट स्थिति 70 कोटाकोटि सागर का

भाग देने पर 30/70 अर्थात् 3/7 भाग आता है। एकेन्द्रिय 1 सागर के अनुपात में कर्म बांधेगा अतः यह कहा जा सकता है कि 1 सागर का 3/7 भाग उत्कृष्ट स्थिति का बन्ध करता है। बेइन्द्रिय 25 सागर का 3/7 भाग, तेइन्द्रिय 50 सागर का 3/7 भाग, चौरेन्द्रिय 100 सागर का 3/7 भाग, असंज्ञी पंचेन्द्रिय 1000 सागर का 3/7 भाग उत्कृष्ट स्थिति बांधते हैं। इन सभी में जघन्य स्थिति अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम की बंधती है। इसी प्रकार से सात कर्मों की स्थितियों का बन्ध जाना जा सकता है।

5. सन्नी पंचेन्द्रिय में सात कर्मों के स्थिति बन्ध के बारे में इतना जानना चाहिए कि दूसरे से लेकर आठवें गुणस्थान तक जो भी कर्म-प्रकृतियों का बन्ध करते हैं, वे अन्तःकोटाकोटि सागरोपम की बांधते हैं। पहले गुणस्थानवर्ती सन्नी जीव कम से कम अन्तः कोटाकोटि सागर की तथा उत्कृष्ट अपने अपने कर्म की उत्कृष्ट स्थिति का बन्ध करते हैं।
6. सन्नी मनुष्य में यह विशेषता है कि वह चौदह ही गुणस्थानों को प्राप्त कर सकता है। अतः नवें-दसवें गुणस्थान में बन्ध-विच्छेद को प्राप्त होने वाली प्रकृतियों का जघन्य स्थिति बन्ध सन्नी मनुष्य ही करता है।
7. सन्नी मनुष्य में भी जो क्षपक श्रेणि पर आरूढ़ होते हैं, वे संज्वलन चौक, पुरुषवेद, 5 ज्ञानावरणीय, 4 दर्शनावरणीय, 5 अन्तराय, साता वेदनीय (साम्परायिक), उच्च गोत्र, यशकीर्ति, इन 22 प्रकृतियों का जघन्य स्थिति बन्ध इन प्रकृतियों के बन्ध-विच्छेद के समय में करते हैं।

अर्थात् संज्वलन चौक व पुरुषवेद इन पाँच का नवें गुणस्थान में तथा शेष 17 प्रकृतियों का दसवें गुण के चरम समय में जघन्य स्थिति बन्ध होता है।

8. सात कर्मों में यह एक सामान्य नियम है कि उत्कृष्ट स्थिति का बन्ध संक्लिष्ट परिणामों में होता है तथा जघन्य स्थिति का बन्ध विशुद्ध परिणामों में होता है, किन्तु तिर्यचायु, मनुष्यायु व देवायु इन तीन प्रकृतियों में यह नियम है कि इनकी उत्कृष्ट स्थिति विशुद्ध परिणामों में ही बन्धती है।
9. एक ही कर्म की जो प्रकृतियाँ अशुभ हैं उनकी स्थिति अधिक होती हैं तथा जो प्रकृतियाँ शुभ होती हैं, उनकी स्थिति कम होती है। जैसे- असातावेदनीय की स्थिति 30 कोटाकोटि सागर की तथा सातावेदनीय की 15 कोटाकोटि सागर की होती है। नीच गोत्र की 20 कोटाकोटि सागर की तथा उच्च गोत्र की 10 कोटाकोटि सागर की होती है। नपुंसक वेद की 20, स्त्रीवेद की 15 तथा पुरुषवेद की 10 कोटाकोटि सागर की उत्कृष्ट स्थिति होती है।
10. यदि 1 कोटाकोटि सागर प्रमाण बन्ध होता है तो उसका अबाधाकाल 100 वर्ष का माना जाता है। इसी अनुपात से सात कर्मों के स्थिति बन्ध में अबाधाकाल होता है। जैसे-
    - 1 कोटाकोटि सागरोपम की स्थिति पर 100 वर्ष के अबाधाकाल के नियम के आधार से गणना करने पर 9, 25, 92, 592 . 64/108 सागरोपम (नौ करोड़, पच्चीस लाख, बानवें हजार पाँच सौ बानवें सागरोपम तथा एक सौ आठिया चौसठ भाग) की स्थिति होने पर 1 मूहूर्त्त का अबाधाकाल।

- एक दिन में 30 मुहूर्त्त, एक वर्ष में 360x30=10,800 मुहूर्त्त तथा 100 वर्षों में 10,800x100=10,80,000 मुहूर्त होते हैं। एक कोटा कोटि की स्थिति में 10,80,000 मुहूर्त्त का भाग देने पर 9,25,92,592 . 64/108 की संख्या आती है।
- 5.5 सागरोपम (साढ़े पाँच सागरोपम) की स्थिति होने पर 1 आवलिका का अबाधाकाल होता है। इससे कम स्थिति बंध होने पर अबाधाकाल अन्तर्मुहूर्त्त ही होता है। अतः एकेन्द्रिय से असन्नी पंचेन्द्रिय द्वारा बांधे जाने वाले सभी सातों कर्मों का अबाधाकाल जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त्त व उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त्त ही रहेगा।

10 कोटाकोटि सागर का बन्ध होने पर	1000 वर्ष अबाधाकाल
15 कोटाकोटि सागर का बन्ध होने पर	1500 वर्ष अबाधाकाल
20 कोटाकोटि सागर का बन्ध होने पर	2000 वर्ष अबाधाकाल
40 कोटाकोटि सागर का बन्ध होने पर	4000 वर्ष अबाधाकाल
70 कोटाकोटि सागर का बन्ध होने पर	7000 वर्ष अबाधाकाल

अर्थात् यह अबाधाकाल कर्म-बन्ध की स्थिति से निश्चित् अनुपात रखता है। कर्मों की स्थिति का अपवर्तन होने पर अबाधा का भी अपवर्तन हो जाता है। 7 हजार वर्ष का उत्कृष्ट अबाधाकाल अपवर्तित स्थिति के अनुपात से अन्तर्मुहूर्त्त तक भी रह सकता है।

11. **मिश्र मोहनीय-सम्यक्त्व मोहनीय का बन्ध नहीं** - कर्मग्रन्थ, सैद्धान्तिक अभिप्राय (विशेषावश्यक भाष्य, बृहत्कल्प भाष्य,

हारिभद्रीय तथा मलयगिरी की आवश्यक सूत्र की टीकाएँ) ने समवेत स्वर में पहले गुणस्थान में मिथ्यात्व मोहनीय के तीन पुंज होने पर ही मिश्र मोहनीय और समकित मोहनीय की सत्ता प्राप्त होना बतलाया है। अबाधाकाल के इस थोकड़े में केवल उदयकाल की अपेक्षा इनकी स्थिति समझनी चाहिए, वरना तो सन्नी पंचेन्द्रिय जीव के 8 वें गुणस्थान तक 4 आयु को छोड़कर 144 प्रकृतियों में से किसी भी प्रकृति की सत्ता अन्तः कोटाकोटि सागरोपम से कम की संभव ही नहीं है।

आगम, कर्म सिद्धान्त के अनुरूप निम्न तथ्य प्रकट होते हैं-

A. दर्शन मोहनीय की तीनों प्रकृति कांक्षा मोहनीय के नाम से कही जाती है।

भगवती 1/3

B. इनमें से मात्र मिथ्यात्व मोहनीय का बन्ध 24 ही दण्डकों के जीव पहले गुणस्थान में करते हैं। जबकि इसका उदय साधु अर्थात् छठे-सातवें गुणस्थान तक भी बताया गया है।

C. 16 दण्डक सन्नी पंचेन्द्रिय- तीन करण करता हुआ पहली बार समकित को (सैद्धान्तिक अभिप्राय से क्षयोपशम समकित) प्राप्त करता हुआ मिथ्यात्व के तीन पुंज कर मिश्र मोहनीय और समकित मोहनीय की स्थिति अन्तःकोटाकोटि सागरोपम की ही सर्जित करता है।

D. क्षयोपशम सम्यक्दृष्टि 66 सागरोपम झाझेरी तक निरन्तर समकित मोहनीय का वेदन कर सकता है, जबकि तीसरे गुणस्थान की स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त होने से मिश्र मोहनीय का उदयकाल अन्तर्मुहूर्त्त से अधिक नहीं हो सकता। यहाँ इसी उदयकाल की अपेक्षा से स्थिति बतलाई गई है।

12. पाँच वर्ण तथा 5 रस नाम कर्म की प्रकृतियों की स्थिति में अशुभ की स्थिति 20 कोटाकोटि सागरोपम की तथा क्रमशः ढाई-ढाई कोटाकोटि कम करते-करते अन्तिम शुभ की स्थिति 10 कोटाकोटि सागरोपम की होती है। याद करने में सुविधा रहे, इसलिए 20 तथा 70 सागरोपम इन दोनों उत्कृष्ट स्थिति को ढाई-ढाई से भाग देने पर जो संख्या आती है, वह सागरोपम के साथ बोली जाती है। जैसे-

20/70 को ढाई से विभाजित करने पर 8/28
17.5/70 को ढाई से विभाजित करने पर 7/28
15/70 को ढाई से विभाजित करने पर 6/28
12.5/70 को ढाई से विभाजित करने पर 5/28
10/70 को ढाई से विभाजित करने पर 4/28

इसीलिए एकेन्द्रिय में 1 सागरोपम का 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग उत्कृष्ट स्थिति बन्ध कहा जाता है।

13. इसी प्रकार छह संहनन व छह संस्थान में उत्कृष्ट स्थिति में दो-दो की वृद्धि करते हुए बतलाई गई है। जैसे- दस, बारह, चौदह, सोलह, अठारह और बीस कोटाकोटि सागरोपम की बतलायी है। इसे मोहनीय की उत्कृष्ट स्थिति से विभाजित करने पर 10/70, 12/70, 14/70, 16/70, 18/70, 20/70

बनती है। याद करने में व बोलने में सुविधा रहे, इस दृष्टि से उक्त स्थिति को दो-दो से विभाजित करने पर क्रमशः 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35 और 10/35 कही जाती है। फिर इसे एकेन्द्रियादि में उनके सागरोपम के अनुपात में बतलायी जाती है।

14. आयु कर्म के सम्बन्ध में अनेक विविधताएँ हैं-

A. यह कर्म जीवन में एक ही बार बंधता है। अति जघन्य परिणामों में आयु का बन्ध नहीं होता तो अति विशुद्ध परिणामों में भी आयु का बन्ध नहीं होता। इन दोनों के मध्य में स्थित परिवर्तमान मध्यम परिणाम (घोलमान परिणाम) में आयु का बंध होता है।

B. नारकी, देवता, युगलिक में 6 मास आयु शेष रहने पर तथा निरुपक्रमी मनुष्य-तिर्यंचों में वर्तमान भव की 1/3 भाग आयु शेष रहने पर बन्धता है।

C. मनुष्य-तिर्यंच में सोपक्रमी आयुष्य वालों में अपनी आयु का तीसरा भाग शेष रहने पर अथवा नवाँ भाग, अथवा सत्ताईसवाँ भाग, अथवा इक्यासीवां भाग अथवा 243 वाँ भाग अथवा 729 वाँ भाग शेष रहने पर अथवा अन्तर्मुहूर्त्त आयु शेष रहने पर आयु बन्धता है।

D. चरमशरीरी जीव को छोड़कर कोई भी जीव आयुष्य कर्म का बन्ध किये बिना मरण को प्राप्त नहीं होता है।

E. अपर्याप्त अवस्था में मरने वाले जीव भी कम से कम तीन पर्याप्ति पूर्ण करने के बाद ही आयुष्य बांधते हैं। आयुष्य बांधने के अन्तर्मुहूर्त्त बाद ही काल करते हैं।

F. आयुष्य बन्ध करने में अन्तर्मुहूर्त्त काल लगता है।

15. आयु कर्म में अबाधाकाल होता है अथवा नहीं ?

कोई जीव आगामी भव का आयु बन्ध करने के बाद जब तक मरण को प्राप्त नहीं होता, तब तक का काल अबाधाकाल माना जाता है। क्योंकि इस अवधि में आगामी भव की बँधी हुई आयु का न तो प्रदेशोदय होता है और न ही विपाकोदय होता है। आयुकर्म का अबाधा काल नहीं मानने का कारण यह है कि सात कर्मों में जो अबाधाकाल का गणितीय नियम है, वह आयुकर्म में लागू नहीं होता है।

गणितीय नियम - 1 कोटाकोटि सागरोपम का स्थिति-बन्ध होने पर 100 वर्ष का अबाधाकाल होता है।

इस गणितीय नियम के अनुसार यदि कोई एक करोड़ पूर्व की आयु वाला सन्नी तिर्यञ्च एवं सन्नी मनुष्य एक तिहाई भाग आयु शेष रहने पर आगामी भव की 5.5 सागरोपम की आयु का बन्ध करें तो उसका उत्कृष्ट अबाधाकाल 7 कर्म के अबाधाकाल के नियम के अनुसार लगभग 1 आवलिका से अधिक नहीं हो सकता। दूसरे शब्दों में आगामी भव के आयुबन्ध और आयु-उदय में एक आवलिका से अधिक का अन्तर नहीं हो सकता। जबकि आगमानुसार तो आगामी भव की आयुबन्ध के बाद भी वह सन्नी मनुष्य एवं सन्नी तिर्यञ्च एक करोड़ पूर्व के एक तिहाई भाग काल तक वर्तमान भव में रह सकता है। यह उसका उत्कृष्ट अबाधाकाल होता है।

कर्म प्रकृतियों के अबाधाकाल का थोकड़ा

(पन्नवणा सूत्र 23 वां पद उद्देशक 2)

(1-20) समुच्चय जीव, पाँच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय और पाँच अन्तराय-ये चौदह प्रकृतियाँ जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की बांधता है तथा पांच निद्रा और असाता वेदनीय-ये छह प्रकृतियाँ जघन्य एक सागरोपम के सातिया तीन भाग अर्थात् 3/7 सागरोपम में पल्योपम के असंख्यातवें भाग न्यून (कम) की बांधता है। ये 20 प्रकृतियाँ उत्कृष्ट तीस कोटाकोटि (कोड़ाकोड़ी) सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल तीन हजार वर्ष का है। एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक ये प्रकृतियाँ जघन्य अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। उत्कृष्ट स्थिति एकेन्द्रिय एक सागरोपम के सातिया तीन भाग यानी (3/7) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय 25 सागरोपम के सातिया तीन भाग यानी (75/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय 50 सागरोपम के सातिया तीन भाग यानी (150/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय 100 सागरोपम के सातिया तीन भाग यानी (300/7) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय 1000 सागरोपम के सातिया तीन भाग यानी (3000/7) सागरोपम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय 14 प्रकृतियाँ जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की और छह प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम (एक कोड़ाकोड़ी सागरोपम से कुछ कम) की बांधता है और उत्कृष्ट तीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल तीन हजार वर्ष का है।

(21) सातावेदनीय के दो भेद- साम्परायिक और ईर्यापथिक। ईर्यापथिक सातावेदनीय की स्थिति दो समय की है। इसको समुच्चय जीव और सन्नी पंचेन्द्रिय ही बांधते हैं। साम्परायिक साता वेदनीय की समुच्चय जीव की अपेक्षा जघन्य 12 मुहूर्त्त, उत्कृष्ट पन्द्रह कोटाकोटि सागरोपम की स्थिति है, अबाधा काल 1500 वर्षों का है। एकेन्द्रिय के

सातावेदनीय की जघन्य स्थिति पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3/14) सागरोपम की, उत्कृष्ट (3/14) सागरोपम की। द्वीन्द्रिय की उत्कृष्ट स्थिति 25 सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (75/14) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय की 50 सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (150/14) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय की 100 सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (300/14) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय की एक हजार सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3000/14) सागरोपम की है। इनकी जघन्य स्थिति अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम है। संज्ञी पंचेन्द्रिय सातावेदनीय बांधे तो जघन्य स्थिति 12 मुहूर्त्त की, उत्कृष्ट पन्द्रह कोटाकोटि सागरोपम की है और अबाधाकाल 1500 वर्षों का है।

(22-24) समुच्चय जीव मिथ्यात्व मोहनीय जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम एक सागरोपम की, उत्कृष्ट 70 कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल सात हजार वर्षों का है। एकेन्द्रिय मिथ्यात्व मोहनीय प्रकृति उत्कृष्ट एक सागरोपम की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम की, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम की बांधते हैं। जघन्य सभी अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय मिथ्यात्व मोहनीय प्रकृति जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की, उत्कृष्ट 70 कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल सात हजार वर्षों का है।

एकेन्द्रिय से असन्नी पंचेन्द्रिय तक मिश्र मोहनीय व सम्यक्त्व मोहनीय का उदय नहीं होता है। समुच्चय जीव और संज्ञी पंचेन्द्रिय के मिश्र मोहनीय का उदयकाल जघन्य-उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त्त तथा सम्यक्त्व

मोहनीय का उदयकाल जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट 66 सागरोपम से कुछ अधिक का है।

(25-49) - चारित्र मोहनीय कर्म की 25 प्रकृतियाँ हैं। समुच्चय जीव अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यानी और प्रत्याख्यानावरण क्रोध, मान, माया, लोभ - ये बारह प्रकृतियाँ बांधे तो जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के सातिया चार भाग यानी (4/7) सागरोपम की, संज्वलन क्रोध की जघन्य दो महीने की, संज्वलन मान की जघन्य एक महीने की, संज्वलन माया की जघन्य पन्द्रह दिन (एक पक्ष) की और संज्वलन लोभ की जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की, उत्कृष्ट सोलह प्रकृतियाँ चालीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल 4000 वर्षों का है। ये 16 प्रकृतियाँ एकेन्द्रिय उत्कृष्ट सागरोपम के सातिया चार भाग यानी (4/7) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम के सातिया चार भाग यानी (100/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम के सातिया चार भाग यानी (200/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के सातिया चार भाग यानी (400/7) सागरोपम की, असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के सातिया चार भाग यानी (4000/7) सागरोपम की बांधते हैं। जघन्य सभी अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय 12 प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, संज्वलन क्रोध जघन्य दो महीने का, संज्वलन मान जघन्य एक महीने का, संज्वलन माया जघन्य पन्द्रह दिन की और संज्वलन लोभ जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त का बांधता है। उत्कृष्ट सोलह प्रकृतियाँ चालीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल चार हजार वर्षों का है।

समुच्चय जीव हास्य, रति-ये दो प्रकृतियाँ जघन्य एक सागरोपम के सातिया एक भाग (1/7) में पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की

और पुरुषवेद जघन्य आठ वर्ष की बांधता है। उत्कृष्ट तीनों प्रकृतियाँ दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल एक हजार वर्ष का है। एकेन्द्रिय ये तीनों प्रकृतियाँ उत्कृष्ट सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (1/7) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (25/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (50/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (100/7) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (1000/7) सागरोपम की बांधते हैं। जघन्य सभी अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय हास्य और रति जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की और पुरुषवेद जघन्य आठ वर्ष का बांधता है, उत्कृष्ट तीनों ही प्रकृतियाँ दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल एक हजार वर्ष का है।

समुच्चय जीव अरति, भय, शोक, जुगुप्सा और नपुंसक वेद- ये पाँच प्रकृतियाँ जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम एक सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2/7) सागरोपम की, उत्कृष्ट बीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल दो हजार वर्षों का है। एकेन्द्रिय ये पांचों प्रकृतियाँ उत्कृष्ट सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2/7) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (50/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (100/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (200/7) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2000/7) सागरोपम की बांधते हैं। जघन्य स्थिति सभी अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये पांचों प्रकृतियाँ

जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट बीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल दो हजार वर्षों का है।

समुच्चय जीव स्त्रीवेद की प्रकृति जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम एक सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3/14) सागरोपम की उत्कृष्ट पन्द्रह कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल 1500 वर्षों का है। एकेन्द्रिय, स्त्री वेद की प्रकृति उत्कृष्ट सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3/14) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (75/14) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (150/14) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (300/14) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3000/14) सागरोपम की बांधते हैं। जघन्य स्थिति सभी अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय स्त्रीवेद की प्रकृति जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट पन्द्रह कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल 1500 वर्षों का है।

(50-53) आयु कर्म की चार प्रकृतियाँ हैं। नैरयिक, नरक और देवता की आयु नहीं बांधता, मनुष्य और तिर्यंच की आयु बांधता है।

नरकायु और देवायु इन दो प्रकृतियों को समुच्चय जीव बांधे तो जघन्य 10,000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक, उत्कृष्ट 33 सागरोपम तथा करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक। एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय नहीं बांधते हैं। असन्नी पंचेन्द्रिय बांधे तो जघन्य 10,000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक, उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग तथा करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक।

सन्नी पंचेन्द्रिय बांधे तो समुच्चय जीव की तरह कहना।

तिर्यंचायु और मनुष्यायु, समुच्चय जीव एवं सन्नी पंचेन्द्रिय बांधे तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट तीन पल्योपम तथा करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक। एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय तक जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट करोड़ पूर्व और अपनी-अपनी आयुष्य का तीसरा भाग अधिक। असन्नी पंचेन्द्रिय बांधे तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग और करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक कहना। मनुष्य, यदि नरकायु और देवायु बांधता है तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त अधिक दस हजार वर्ष की, उत्कृष्ट तेतीस सागरोपम करोड़ पूर्व के तीसरे भाग अधिक की बांधता है। मनुष्य यदि मनुष्यायु और तिर्यंचायु बांधता है तो जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त की, उत्कृष्ट तीन पल्योपम तथा करोड़ पूर्व के तीसरे भाग अधिक की बांधता है।

तिर्यन्ञ्च, मनुष्य यदि नरकायु, तिर्यञ्चायु, मनुष्यायु और देवायु में से किसी भी आयु का बन्ध करें तो अबाधाकाल जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त, उत्कृष्ट एक करोड़ पूर्व का तीसरा भाग होता है। नारकी, देवता यदि तिर्यञ्चायु, मनुष्यायु का बन्ध करे तो अबाधाकाल छह माह का होता है।

(54-148) नाम कर्म की 93 और गोत्र कर्म की 2 प्रकृतियों का बंध। नरक गति, नरकानुपूर्वी और वैक्रिय चतुष्क (वैक्रिय शरीर, वैक्रिय अंगोपांग, वैक्रिय बन्धन, वैक्रिय संघात) ये छह प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम हजार सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2000/7) सागरोपम की उत्कृष्ट बीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल दो हजार वर्षों का है। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव ये छह प्रकृतियाँ नहीं बांधते। असंज्ञी पंचेन्द्रिय ये छह प्रकृतियाँ जघन्य पल्योपम के

असंख्यातवें भाग कम हजार सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2000/7) सागरोपम की उत्कृष्ट पूरे (2000/7) सागरोपम की बांधता है। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये छह प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की, उत्कृष्ट बीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल दो हजार वर्षों का है। देवगति, देवानुपूर्वी ये दो प्रकृतियाँ समुच्चय जीव बांधता है तो जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम हजार सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (1000/7) सागरोपम की, उत्कृष्ट दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल एक हजार वर्ष का है। एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय ये दो प्रकृतियाँ नहीं बांधते। असंज्ञी पंचेन्द्रिय ये दोनों प्रकृतियाँ जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम हजार सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (1000/7) सागरोपम की उत्कृष्ट पूरे (1000/7) सागरोपम की बांधता है। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये दोनों प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल एक हजार वर्षों का है।

समुच्चय जीव मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी ये दो प्रकृतियाँ जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3/14) सागरोपम की, उत्कृष्ट पन्द्रह कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल पन्द्रह सौ वर्षों का है। एकेन्द्रिय जीव ये दोनों प्रकृतियाँ उत्कृष्ट सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3/14) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (75/14) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (150/14) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (300/14) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के सातिया डेढ़ भाग यानी (3000/14) सागरोपम की बांधते हैं और जघन्य अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें

भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये दोनों प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की, उत्कृष्ट पन्द्रह कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल पन्द्रह सौ वर्षों का है।

तिर्यंचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क (औदारिक शरीर, औदारिक अंगोपांग, औदारिक बंधन, औदारिक संघात), तैजस त्रिक (तैजस शरीर, तैजस बंधन, तैजस संघात) कार्मण त्रिक (कार्मण शरीर, कार्मण बंधन, कार्मण संघात), चार अशुभ स्पर्श (कर्कश, भारी, शीत, रूक्ष) और दुरभिगंध, ये 19 प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2/7) सागरोपम की, उत्कृष्ट बीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल दो हजार वर्षों का है। ये 19 प्रकृतियाँ एकेन्द्रिय उत्कृष्ट सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2/7) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय उत्कृष्ट पच्चीस सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (50/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय उत्कृष्ट पचास सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (100/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय उत्कृष्ट सौ सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (200/7) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय उत्कृष्ट हजार सागरोपम के सातिया दो भाग यानी (2000/7) सागरोपम की बांधते हैं। ये सभी जघन्य अपनी-अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये 19 प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट बीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल दो हजार वर्षों का है।

तीन विकलेन्द्रिय (द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय) सूक्ष्मत्रिक (सूक्ष्म नाम, साधारण नाम, अपर्याप्त नाम) ये छह प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के पैंतीसिया

नव भाग यानी (9/35) सागरोपम की उत्कृष्ट अठारह कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है। अबाधा काल अठारह सौ वर्षों का है। ये छह प्रकृतियाँ एकेन्द्रिय बांधता है तो उत्कृष्ट एक सागरोपम के पैंतीसिया नव भाग यानी (9/35) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय 25 सागरोपम के पैंतीसिया नव भाग यानी (45/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय 50 सागरोपम के पैंतीसिया नव भाग यानी (90/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के पैंतीसिया नव भाग यानी (180/7) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के पैंतीसिया नव भाग यानी (1800/7) सागरोपम की बांधते है और जघन्य अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये छहों प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट अठारह कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल अठारह सौ वर्षों का है।

चार शुभ स्पर्श (कोमल, लघु, उष्ण, स्निग्ध) और सुरभिगंध ये पांच प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (1/7) सागरोपम की उत्कृष्ट दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल एक हजार वर्षों का है। ये पांच प्रकृतियाँ एकेन्द्रिय सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (1/7) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (25/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय 50 सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (50/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (100/7) सागरोपम की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के सातिया एक भाग यानी (1000/7) सागरोपम की बांधते हैं और जघन्य अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये पांचों प्रकृतियाँ

जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल एक हजार वर्षों का है।

आहारक चतुष्क (आहारक शरीर, आहारक अंगोपांग, आहारक बंधन, आहारक संघात) और जिन नाम, ये पांच प्रकृतियाँ समुच्चय जीव और संज्ञी पंचेन्द्रिय (अप्रमत्त साधु) ही बांधे, जघन्य उत्कृष्ट अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की बांधते हैं। एकेन्द्रिय से असंज्ञी पंचेन्द्रिय तक इन पांच प्रकृतियों को बंध नहीं करते हैं।

पांच वर्ण (काला, नीला, लाल, पीला और श्वेत) पांच रस (तीखा, कड़वा, कषैला, खट्टा और मीठा) - ये दसों प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के अठाईसिया आठ भाग, सात भाग, छह भाग, पाँच भाग और चार भाग यानी (8/28), (7/28),(6/28), (5/28) और (4/28) सागरोपम की उत्कृष्ट 20 कोटाकोटि सागरोपम की, 17.5 कोटाकोटि सागरोपम की, 15 कोटाकोटि सागरोपम की, 12.5 कोटाकोटि सागरोपम की और 10 कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल क्रमशः दो हजार, साढ़े सतरह सौ, पन्द्रह सौ, साढ़े बारह सौ और एक हजार वर्षों का है।

एकेन्द्रिय ये दस प्रकृतियाँ उत्कृष्ट सागरोपम के अठाईसिया आठ भाग यावत् चार भाग की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम के अठाईसिया आठ भाग यावत् चार भाग की, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम के अठाईसिया आठ भाग यावत् चार भाग की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के अठाईसिया आठ भाग यावत् चार भाग की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के अठाईसिया आठ भाग यावत् चार भाग की बांधते हैं और जघन्य अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये दस प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः

कोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट बीस कोटाकोटि सागरोपम की, 17.5 कोटाकोटि सागरोपम की, 15 कोटाकोटि सागरोपम की, 12.5 कोटाकोटि सागरोपम की और दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है। अबाधा काल क्रमशः 2000 वर्षों का, 1750 वर्षों का, 1500 वर्षों का, 1250 वर्षों का और 1000 वर्षों का है।

छह संहनन और छह संस्थान ये बारह प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के पैंतीसिया पांच भाग, छह भाग, सात भाग, आठ भाग, नौ भाग और दस भाग यानी (5/35), (6/35),(7/35), (8/35) और (9/35), (10/35) सागरोपम की उत्कृष्ट 10,12,14,16,18 और 20 कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल 1000, 1200, 1400, 1600, 1800 और 2000 वर्षों का है। ये बारह प्रकृतियाँ एकेन्द्रिय उत्कृष्ट सागरोपम के पैंतीसिया पांच भाग, छह भाग, सात भाग, आठ भाग, नौ भाग और दस भाग की, द्वीन्द्रिय पच्चीस सागरोपम के पैंतीसिया पांच भाग यावत् दस भाग, त्रीन्द्रिय पचास सागरोपम के पैंतीसिया पांच भाग यावत् दस भाग की, चतुरिन्द्रिय सौ सागरोपम के पैंतीसिया पांच भाग यावत् दस भाग की और असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के पैंतीसिया पांच भाग यावत् दस भाग की बांधते हैं। जघन्य सब में अपनी अपनी उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की है। संज्ञी पंचेन्द्रिय ये बारह प्रकृतियाँ जघन्य अन्तःकोटाकोटि सागरोपम की उत्कृष्ट दस, बारह, चौदह, सोलह, अठारह और बीस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल 1000, 1200, 1400, 1600, 1800 और 2000 वर्षों का है।

सूक्ष्म त्रिक (सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त) के सिवाय स्थावर दशक की सात प्रकृतियाँ (स्थावर, अस्थिर, अशुभ, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय और अयशःकीर्ति) जिन नाम के सिवाय सात प्रत्येक प्रकृतियाँ (अगुरूलघु, उपघात, पराघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, निर्माण) त्रस

दशक में से चार प्रकृतियाँ (त्रस नाम, बादर नाम, पर्याप्त नाम, प्रत्येक नाम) नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति-ये बीस प्रकृतियाँ तिर्यंच गति की तरह जघन्य सागरोपम के सातिया दो भाग में पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की उत्कृष्ट 20 कोटाकोटि सागरोपम से कहना।

त्रस दशक की छह प्रकृतियाँ (स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय और यशःकीर्ति), उच्च गोत्र और शुभ विहायोगति-इन आठ प्रकृतियों में से यशःकीर्ति और उच्च गोत्र - ये दो प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य आठ मुहूर्त्त की और शेष छह प्रकृतियाँ समुच्चय जीव जघन्य पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम सागरोपम के सातिया एक भाग की यानी (1/7) सागरोपम की बांधता है, उत्कृष्ट आठों प्रकृतियाँ दश कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधा काल एक हजार वर्ष का है। ये आठों प्रकृतियाँ एकेन्द्रिय उत्कृष्ट सागरोपम के सातिया एक भाग की यानी (1/7) सागरोपम की, द्वीन्द्रिय 25 सागरोपम के सातिया एक भाग की यानी (25/7) सागरोपम की, त्रीन्द्रिय 50 सागरोपम के सातिया एक भाग की यानी (50/7) सागरोपम की, चतुरिन्द्रिय 100 सागरोपम के सातिया एक भाग की यानी (100/7) सागरोपम की, असंज्ञी पंचेन्द्रिय हजार सागरोपम के सातिया एक भाग की यानी (1000/7) सागरोपम की बांधते हैं, जघन्य उक्त उत्कृष्ट स्थिति से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम की बांधते हैं। संज्ञी पंचेन्द्रिय यशःकीर्ति और उच्च गोत्र जघन्य आठ मुहूर्त्त की और शेष छह प्रकृतियाँ जघन्य अन्तः कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है तथा आठों प्रकृतियाँ उत्कृष्ट दस कोटाकोटि सागरोपम की बांधता है, अबाधाकाल एक हजार वर्ष का है। इस प्रकार कुल मिलाकर- 20 + 1 + 16 + 3 + 5 + 1 + 1 + 2 + 4 + 6 + 2 + 2 + 16 + 6 + 5 + 5 + 10 + 12 + 20 + 8 = 148 आलापक हुए।

अबाधाकाल का थोकड़ा- चार्ट रूप में

क्र.सं.	प्रकृतियों के नाम	बांधने वाले जीव	जघन्य स्थिति	उत्कृष्ट स्थिति	उत्कृष्ट अबाधाकाल
1-14	5 ज्ञाना., 4 दर्श., 5 अन्त.	समुच्चय जीव	अन्तर्मुहूर्त्त	30 कोटाकोटि सागरोपम	3000 वर्ष
15-20	5 निद्रा और असाता वेदनीय	समुच्चय जीव	1 सागर का 3/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	30 कोटाकोटि सागरोपम	3000 वर्ष
1-20	5 ज्ञाना., 4 दर्श., 5 अन्त., 5 निद्रा और असाता वेदनीय	एकेन्द्रिय	1 सागर का 3/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	एक साग. के 3/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
1-20	5 ज्ञाना., 4 दर्श., 5 अन्त., 5 निद्रा और असाता वेदनीय	द्वीन्द्रिय	25 सागर का 3/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	25 साग. के 3/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
1-20	5 ज्ञाना., 4 दर्श., 5 अन्त., 5 निद्रा और असाता वेदनीय	त्रीन्द्रिय	50 सागर का 3/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	50 साग. के 3/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त

1–20	5 ज्ञाना., 4 दर्श., 5 अन्त., 5 निद्रा और असाता वेदनीय	चतुरिन्द्रिय	100 सागर का 3/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	100 साग. के 3/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
1–20	5 ज्ञाना., 4 दर्श., 5 अन्त., 5 निद्रा और असाता वेदनीय	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर का 3/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1000 साग. के 3/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
1–14	5 ज्ञाना., 4 दर्श., 5 अन्त.,	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तर्मुहूर्त्त	30 कोटाकोटि सागरोपम	3000 वर्ष
15–20	5 निद्रा और असाता वेदनीय	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	30 कोटाकोटि सागरोपम	3000 वर्ष
21	सातावेदनीय (साम्परायिक)	समुच्चय जीव	12 मुहूर्त्त	15 कोटाकोटि सागरोपम	1500 वर्ष
21	सातावेदनीय	एकेन्द्रिय	एक सागर का 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	एक सागर का 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
21	सातावेदनीय	द्वीन्द्रिय	25 सागर का 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	25 सागर का 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त

21	सातावेदनीय	त्रीन्द्रिय	50 सागर का 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	50 सागर का 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
21	सातावेदनीय	चतुरिन्द्रिय	100 सागर का 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	100 सागर का 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
21	सातावेदनीय	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर का 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1000 सागर का 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
21	सातावेदनीय	संज्ञी पंचेन्द्रिय	12 मुहूर्त्त	15 कोटाकोटि सागरोपम	1500 वर्ष
22–33	अन., अप्र., प्रत्या. क्रोध, मान, माया, लोभ	समुच्चय जीव	1 सागर का 4/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	40 कोटाकोटि सागरोपम	4000 वर्ष
34	संज्वलन क्रोध	समुच्चय जीव	2 महीने	40 कोटाकोटि सागरोपम	4000 वर्ष
35	संज्वलन मान	समुच्चय जीव	1 महीने	40 कोटाकोटि सागरोपम	4000 वर्ष

36	संज्वलन माया	समुच्चय जीव	पन्द्रह दिन	40 कोटाकोटि सागरोपम	4000 वर्ष
37	संज्वलन लोभ	समुच्चय जीव	अन्तर्मुहूर्त्त	40 कोटाकोटि सागरोपम	4000 वर्ष
22-37	अन., अप्र., प्रत्या., संज्व. क्रोध, मान, माया, लोभ	एकेन्द्रिय	एक सागर के 4/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	एक सागर के 4/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
22-37	अन., अप्र., प्रत्या., संज्व. क्रोध, मान, माया, लोभ	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 4/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	25 सागर के 4/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
22-37	अन., अप्र., प्रत्या., संज्व. क्रोध, मान, माया, लोभ	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 4/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	50 सागर के 4/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
22-37	अन., अप्र., प्रत्या., संज्व. क्रोध, मान, माया, लोभ	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 4/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	100 सागर के 4/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त

22–37	अन., अप्र., प्रत्या., संज्व. क्रोध, मान, माया, लोभ	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 4/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1000 सागर के 4/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
22–33	अन., अप्र., प्रत्या. क्रोध, मान, माया, लोभ	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	40 कोटाकोटि साग.	4000 वर्ष
34	संज्वलन क्रोध	संज्ञी पंचेन्द्रिय	2 महीने	40 कोटाकोटि साग.	4000 वर्ष
35	संज्वलन मान	संज्ञी पंचेन्द्रिय	1 महीने	40 कोटाकोटि साग.	4000 वर्ष
36	संज्वलन माया	संज्ञी पंचेन्द्रिय	15 दिन	40 कोटाकोटि साग.	4000 वर्ष
37	संज्वलन लोभ	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तर्मुहूर्त्त	40 कोटाकोटि साग.	4000 वर्ष
38–39	हास्य, रति	समुच्चय जीव	एक सागर के 1/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष

40	पुरुषवेद	समुच्चय जीव	आठ वर्ष	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
38-40	हास्य, रति, पुरुषवेद	एकेन्द्रिय	1 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
38-40	हास्य, रति, पुरुषवेद	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	25 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
38-40	हास्य, रति, पुरुषवेद	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	50 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
38-40	हास्य, रति, पुरुषवेद	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	100 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
38-40	हास्य, रति, पुरुषवेद	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1000 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त

38-39	हास्य, रति	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तःकोटाकोटि सागरोपम	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
40	पुरुषवेद	संज्ञी पंचेन्द्रिय	8 वर्ष	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
41-45	अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, नपुंसक वेद	समुच्चय जीव	एक सागर के 2/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	20 कोटाकोटि सागरोपम	2000 वर्ष
41-45	अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, नपुंसक वेद	एकेन्द्रिय	1 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
41-45	अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, नपुंसक वेद	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	25 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
41-45	अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, नपुंसक वेद	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	50 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त

41-45	अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, नपुंसक वेद	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	100 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
41-45	अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, नपुंसक वेद	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1000 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
41-45	अरति, भय, शोक, जुगुप्सा, नपुंसक वेद	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	20 कोटाकोटि सागरोपम	2000 वर्ष
46	स्त्रीवेद	समुच्चय जीव	एक सागर के 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	15 कोटाकोटि सागरोपम	1500 वर्ष
46	स्त्रीवेद	एकेन्द्रिय	1 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
46	स्त्रीवेद	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	25 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त

46	स्त्रीवेद	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	50 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
46	स्त्रीवेद	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	100 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
46	स्त्रीवेद	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1000 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
46	स्त्रीवेद	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	15 कोटाकोटि सागरोपम	1500 वर्ष
47	मिथ्यात्व मोहनीय	समुच्चय जीव	एक सागरोपम में पल्यो. का असं. भाग कम	70 कोटाकोटि सागरोपम	7000 वर्ष
47	मिथ्यात्व मोहनीय	एकेन्द्रिय	1 सागरोपम में पल्यो. के असं. भाग कम	1 सागरोपम	अन्तर्मुहूर्त्त

47	मिथ्यात्व मोहनीय	द्वीन्द्रिय	25 सागरोपम में पल्यो. के असं. भाग कम	25 सागरोपम	अन्तर्मुहूर्त्त
47	मिथ्यात्व मोहनीय	त्रीन्द्रिय	50 सागरोपम में पल्यो. के असं. भाग कम	50 सागरोपम	अन्तर्मुहूर्त्त
47	मिथ्यात्व मोहनीय	चतुरिन्द्रिय	100 सागरोपम में पल्यो. के असं. भाग कम	100 सागरोपम	अन्तर्मुहूर्त्त
47	मिथ्यात्व मोहनीय	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागरोपम में पल्यो. के असं. भाग कम	1000 सागरोपम	अन्तर्मुहूर्त्त
47	मिथ्यात्व मोहनीय	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	70 कोटाकोटि सागरोपम	7000 वर्ष
48	मिश्र मोहनीय	समुच्चय जीव	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त
48	मिश्र मोहनीय	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त	अन्तर्मुहूर्त्त

49	सम्यक्त्व मोहनीय	समुच्चय जीव	अन्तर्मुहूर्त्त	66 सागरोपम से कुछ अधिक	अन्तर्मुहूर्त्त
49	सम्यक्त्व मोहनीय	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तर्मुहूर्त्त	66 सागरोपम से कुछ अधिक	अन्तर्मुहूर्त्त
50-51	नरकायु और देवायु	समुच्चय जीव	10,000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक	33 सागरोपम और करोड़ पूर्व का 3रा भाग अधिक	करोड़ पूर्व का तीसरा भाग
50-51	नरकायु और देवायु	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	10,000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक	पल्यो. का असं. भाग तथा करोड़ पूर्व का 3रा भाग अधिक	करोड़ पूर्व का तीसरा भाग
50-51	नरकायु और देवायु	संज्ञी पंचेन्द्रिय	10,000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक	33 सागरोपम और करोड़ पूर्व का 3रा भाग अधिक	करोड़ पूर्व का तीसरा भाग

50–51	नरकायु और देवायु	मनुष्य	अन्तर्मुहूर्त्त अधिक 10000 वर्ष	33 साग. करोड़ पूर्व के तीसरे भाग अधिक	करोड़ पूर्व का तीसरा भाग
52–53	तिर्यंचायु और मनुष्यायु	समुच्चय जीव	अन्तर्मुहूर्त्त	तीन पल्योपम तथा करोड़ पूर्व का 3रा भाग अधिक	करोड़ पूर्व का तीसरा भाग
52–53	तिर्यंचायु और मनुष्यायु	एके., द्वी., त्री., चतु.	अन्तर्मुहूर्त्त	करोड़ पूर्व और अपनी आयु का तीसरा भाग अधिक	अपनी–अपनी आयु का तीसरा भाग
52–53	तिर्यंचायु और मनुष्यायु	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तर्मुहूर्त्त	पल्यो. का असं. भाग और करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक	अपनी–अपनी आयु का तीसरा भाग

52-53	तिर्यंचायु और मनुष्यायु	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तर्मुहूर्त्त	तीन पल्योपम तथा करोड़ पूर्व का 3रा भाग अधिक	करोड़ पूर्व का तीसरा भाग
52-53	तिर्यंचायु और मनुष्यायु	मनुष्य	अन्तर्मुहूर्त्त	तीन पल्योपम करोड़ पूर्व का 3रा भाग अधिक	करोड़ पूर्व का तीसरा भाग
54-59	नरक गति, नरकानुपूर्वी और वैक्रिय चतुष्क	समुच्चय जीव	1000 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	20 कोटाकोटि सागरोपम	2000 वर्ष
54-59	नरक गति, नरकानुपूर्वी और वैक्रिय चतुष्क	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1000 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
54-59	नरक गति, नरकानुपूर्वी और वैक्रिय चतुष्क	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	20 कोटाकोटि सागरोपम	2000 वर्ष

60-61	देवगति, देवानुपूर्वी	समुच्चय जीव	1000 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
60-61	देवगति, देवानुपूर्वी	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1000 सागर का 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
60-61	देवगति, देवानुपूर्वी	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तःकोटाकोटि सागरोपम	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
62-63	मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी	समुच्चय जीव	1 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	15 कोटाकोटि सागरोपम	1500 वर्ष
62-63	मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी	एकेन्द्रिय	1 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
62-63	मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	25 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त

62-63	मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	50 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
62-63	मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	100 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
62-63	मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 3/14 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1000 सागर के 3/14 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
62-63	मनुष्य गति, मनुष्यानुपूर्वी	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	15 कोटाकोटि सागरोपम	1500 वर्ष
64-102	तिर्यचगति, तिर्यचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की 7 प्रकृतियां, जिन नाम के सिवाय 7 प्रत्येक	समुच्चय जीव	1 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	20 कोटाकोटि सागरोपम	2000 वर्ष

	प्रकृतियां,त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति				
64-102	तिर्यचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की 7 प्रकृतियां, जिन नाम के सिवाय 7 प्रत्येक प्रकृतियां,त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति	एकेन्द्रिय	1 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
64-102	तिर्यचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की 7 प्रकृतियां, जिन	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	25 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त

	नाम के सिवाय 7 प्रत्येक प्रकृतियां,त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति				
64-102	तिर्यचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की 7 प्रकृतियां, जिन नाम के सिवाय 7 प्रत्येक प्रकृतियां,त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	50 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
64-102	तिर्यचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	100 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त

	स्थावर दशक की 7 प्रकृतियां, जिन नाम के सिवाय 7 प्रत्येक प्रकृतियां,त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति				
64-102	तिर्यचगति, तिर्यचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की 7 प्रकृतियां, जिन नाम के सिवाय 7 प्रत्येक प्रकृतियां,त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 2/7 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1000 सागर के 2/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
64-102	तिर्यचगति, तिर्यचानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, औदारिक चतुष्क, तैजस त्रिक, कार्मण त्रिक, चार अशुभ स्पर्श	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	20 कोटाकोटि सागरोपम	2000 वर्ष

	और दुरभिगंध, सूक्ष्म त्रिक के सिवाय स्थावर दशक की 7 प्रकृतियां, जिन नाम के सिवाय 7 प्रत्येक प्रकृतियां,त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक नाम, नीच गोत्र और अशुभ विहायोगति				
103-108	3 विकलेन्द्रिय, सूक्ष्मत्रिक	समुच्चय जीव	1 सागर के 9/35 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	18 कोटाकोटि सागरोपम	1800 वर्ष
103-108	3 विकलेन्द्रिय, सूक्ष्मत्रिक	एकेन्द्रिय	1 सागर के 9/35 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1 सागर के 9/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
103-108	3 विकलेन्द्रिय, सूक्ष्मत्रिक	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 9/35 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	25 सागर के 9/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
103-108	3 विकलेन्द्रिय, सूक्ष्मत्रिक	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 9/35 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	50 सागर के 9/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त

103-108	3 विकलेन्द्रिय, सूक्ष्मत्रिक	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 9/35 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	100 सागर के 9/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
103-108	3 विकलेन्द्रिय, सूक्ष्मत्रिक	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 9/35 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1000 सागर के 9/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
103-108	3 विकलेन्द्रिय, सूक्ष्मत्रिक	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	18 कोटाकोटि सागरोपम	1800 वर्ष
109-110	यशःकीर्ति व उच्च गोत्र	समुच्चय जीव	8 मुहूर्त्त की	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
111-121	4 शुभ स्पर्श और सुरभिगंध, स्थिर पंचक, शुभ विहायोगति	समुच्चय जीव	1 सागर के 1/7 भाग में पल्योपम के असं. भाग कम	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
109-121	4 शुभ स्पर्श और सुरभिगंध, स्थिर षट्क, शुभ विहायोगति, उच्च गोत्र	एकेन्द्रिय	1 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त

109-121	4 शुभ स्पर्श और सुरभिगंध, स्थिर षट्क, शुभ विहायोगति , उच्च गोत्र	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	25 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
109-121	4 शुभ स्पर्श और सुरभिगंध, स्थिर षट्क, शुभ विहायोगति, उच्च गोत्र	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	50 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
109-121	4 शुभ स्पर्श और सुरभिगंध, स्थिर षट्क, शुभ विहायोगति, उच्च गोत्र	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	100 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
109-121	4 शुभ स्पर्श और सुरभिगंध, स्थिर षट्क, शुभ विहायोगति, उच्च गोत्र	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 1/7 भाग में पल्यो. का असं. भाग कम	1000 सागर के 1/7 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
109-110	यशःकीर्ति व उच्च गोत्र	संज्ञी पंचेन्द्रिय	8 मुहूर्त्त की	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष
111-121	4 शुभ स्पर्श और सुरभिगंध, स्थिर पंचक, शुभ विहायोगति	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	10 कोटाकोटि सागरोपम	1000 वर्ष

122–126	आहारक चतुष्क और जिन नाम	समुच्चय जीव	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	अन्तर्मुहूर्त्त
122–126	आहारक चतुष्क और जिन नाम	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	अन्तर्मुहूर्त्त
127–136	पांच वर्ण, पांच रस	समुच्चय जीव	एक सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	20, 17.5 , 15, 12.5, 10 कोटाकोटि सागरोपम	2000, 1750, 1500, 1250, 1000 वर्ष
127–136	पांच वर्ण, पांच रस	एकेन्द्रिय	एक सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
127–136	पांच वर्ण, पांच रस	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	25 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त

127-136	पांच वर्ण, पांच रस	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	50 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
127-136	पांच वर्ण, पांच रस	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	100 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
127-136	पांच वर्ण, पांच रस	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1000 सागर के 8/28, 7/28, 6/28, 5/28, 4/28 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
127-136	पांच वर्ण, पांच रस	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	20, 17.5 , 15, 12.5, 10 कोटाकोटि सागरोपम	2000, 1750, 1500, 1250, 1000 वर्ष

137-148	6 संहनन, 6 संस्थान	समुच्चय जीव	एक सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	10, 12 , 14, 16, 18 और 20 कोटाकोटि सागरोपम	1000, 1200, 1400, 1600, 1800, 2000 वर्ष
137-148	6 संहनन, 6 संस्थान	एकेन्द्रिय	एक सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	एक सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
137-148	6 संहनन, 6 संस्थान	द्वीन्द्रिय	25 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	25 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
137-148	6 संहनन, 6 संस्थान	त्रीन्द्रिय	50 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग में	50 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35,	अन्तर्मुहूर्त्त

			पल्यो. के असं. भाग कम	9/35, 10/35 भाग	
137–148	6 संहनन, 6 संस्थान	चतुरिन्द्रिय	100 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	100 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
137–148	6 संहनन, 6 संस्थान	असंज्ञी पंचेन्द्रिय	1000 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग में पल्यो. के असं. भाग कम	1000 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35 भाग	अन्तर्मुहूर्त्त
137–148	6 संहनन, 6 संस्थान	संज्ञी पंचेन्द्रिय	अन्तः कोटाकोटि सागरोपम	10, 12, 14, 16, 18 और 20 कोटाकोटि सागरोपम	1000, 1200, 1400, 1600, 1800 और 2000 वर्ष

<u>अठाणु बोल का बासठिया</u>

(महादण्डक)

प्रज्ञापना सूत्र पद 3 में 98 बोल की अल्पबहुत्व का वर्णन है। वह बासठिया युक्त इस प्रकार है-

	बोल	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
1.	सबसे थोड़े गर्भज मनुष्य	2	14	15	12	6
2.	इनसे मनुष्यिनी संख्यात गुणी	2	14	13	12	6
3.	बादर तेउकाय पर्याप्त असंख्यात गुणा	1	1	1	3	3
4.	पाँच अनुत्तर विमान के देव असंख्यात गुणा	2	1	11	6	1
5.	ग्रैवेयक की ऊपर की त्रिक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
6.	मध्यम त्रिक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
7.	नीचे की त्रिक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
8.	बारहवें देवलोक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
9.	ग्यारहवें देवलोक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
10.	दसवें देवलोक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
11.	नौवें देवलोक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
12.	सातवीं नरक के नेरइये असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
13.	छठी नरक के नेरइये असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
14.	आठवें देवलोक के देव असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
15.	सातवें देवलोक के देव असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1

16.	पाँचवीं नरक के नेरइये असंख्यात गुणा	2	4	11	9	2
17.	छठे देवलोक के देव असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
18.	चौथी नरक के नेरइये असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
19.	पाँचवें देवलोक के देव असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
20.	तीसरी नरक के नेरइये असंख्यात गुणा	2	4	11	9	2
21.	चौथे देवलोक के देव असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
22.	तीसरे देवलोक के देव असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
23.	दूसरी नरक के नेरइये असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
24.	सम्मूर्च्छिम मनुष्य असंख्यात गुणा	1	1	3	4	3
25.	दूसरे देवलोक के देव असंख्यात गुणा	2	4	11	9	1
26.	दूसरे देवलोक की देवी संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
27.	पहले देवलोक के देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
28.	पहले देवलोक की देवी संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
29.	भवनपति देव असंख्यात गुणा	3	4	11	9	4
30.	भवनपति देवी संख्यात गुणा	2	4	11	9	4
31.	पहली नरक के नेरइये असंख्यात गुणा	3	4	11	9	1
32.	खेचर तिर्यंच पुरुष असंख्यात गुणा	2	5	13	9	6
33.	खेचर स्त्री संख्यात गुणी	2	5	13	9	6
34.	थलचर पुरुष संख्यात गुणा	2	5	13	9	6
35.	थलचर स्त्री संख्यात गुणी	2	5	13	9	6
36.	जलचर पुरुष संख्यात गुणा	2	5	13	9	6
37.	जलचर स्त्री संख्यात गुणी	2	5	13	9	6

38.	व्यन्तर देव संख्यात गुणा	3	4	11	9	4
39.	व्यन्तर देवी संख्यात गुणी	2	4	11	9	4
40.	ज्योतिषी देव संख्यात गुणा	2	4	11	9	1
41.	ज्योतिषी देवी संख्यात गुणी	2	4	11	9	1
42.	खेचर नपुंसक (गर्भज) सं. गुणा	2	5	13	9	6
43.	थलचर नपुंसक (गर्भज) सं. गुणा	2	5	13	9	6
44.	जलचर नपुंसक (गर्भज) सं. गुणा	2	5	13	9	6
45.	चौरेंद्रिय के पर्याप्त संख्यात गुणा	1	1	2	4	3
46.	पंचेन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक	2	12	14	10	6
47.	बेइन्द्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक	1	1	2	3	3
48.	तेइंद्रिय के पर्याप्त विशेषाधिक	1	1	2	3	3
49.	पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त असं. गुणा	2	3	5	9	6
50.	चौरेंद्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक	1	2	3	6	3
51.	तेइंद्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक	1	2	3	5	3
52.	बेइंद्रिय के अपर्याप्त विशेषाधिक	1	2	3	5	3
53.	प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय के पर्याप्त असंख्यात गुणा	1	1	1	3	3
54.	बादर निगोद के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3
55.	बादर पृथ्वीकाय के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3
56.	बादर अप्काय के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	1	3	3
57.	बादर वायुकाय के पर्याप्त असं. गुणा	1	1	4	3	3
58.	बादर तेउकाय के अपर्याप्त असं. गुणा	1	1	3	3	3
59.	प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा	1	1	3	3	4
60.	बादर निगोद के अपर्याप्त असं. गुणा	1	1	3	3	3
61.	बादर पृथ्वीकाय के अपर्या. असं. गुणा	1	1	3	3	4
62.	बादर अप्. के अपर्या. असं. गुणा	1	1	3	3	4
63.	बादर वायुकाय के अपर्या. असं. गुणा	1	1	3	3	3

64.	सूक्ष्म तेउकाय के अपर्या. असं. गुणा	1	1	3	3	3
65.	सूक्ष्म पृथ्वीकाय के अपर्या. विशेषाधिक	1	1	3	3	3
66.	सूक्ष्म अप्काय के अपर्या. विशेषाधिक	1	1	3	3	3
67.	सूक्ष्म वायुकाय के अपर्या. विशेषाधिक	1	1	3	3	3
68.	सूक्ष्म तेउकाय के पर्याप्त सं. गुणा	1	1	1	3	3
69.	सूक्ष्म पृथ्वीकाय के पर्याप्त विशेषा.	1	1	1	3	3
70.	सूक्ष्म अप्काय के पर्याप्त विशेषा.	1	1	1	3	3
71.	सूक्ष्म वायुकाय के पर्याप्त विशेषा.	1	1	1	3	3
72.	सूक्ष्म निगोद के अपर्या. असं. गुणा	1	1	3	3	3
73.	सूक्ष्म निगोद के पर्याप्त सं. गुणा	1	1	1	3	3
74.	अभव्य जीव अनंत गुणा	14	1	13	6	6
75.	प्रतिपतित समदृष्टि अनंत गुणा	14	2	13	6	6
76.	सिद्ध भगवंत अनंत गुणा	0	0	0	2	0
77.	बादर वनस्पतिकाय के पर्याप्त अनंत गुणा	1	1	1	3	3
78.	बादर के पर्याप्त विशेषाधिक	6	14	15	12	6
79.	बादर वनस्पतिकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा	1	1	3	3	4
80.	बादर के अपर्याप्त विशेषाधिक	6	3	5	9	6
81.	समुच्चय बादर विशेषाधिक	12	14	15	12	6
82.	सूक्ष्म वनस्पतिकाय के अपर्याप्त असंख्यात गुणा	1	1	3	3	3
83.	सूक्ष्म के अपर्याप्त विशेषाधिक	1	1	3	3	3
84.	सूक्ष्म वनस्पतिकाय पर्याप्त संख्यात गुणा	1	1	1	3	3
85.	सूक्ष्म के पर्याप्त विशेषाधिक	1	1	1	3	3
86.	समुच्चय सूक्ष्म विशेषाधिक	2	1	3	3	3
87.	भवसिद्धिया विशेषाधिक	14	14	15	12	6
88.	निगोदिया जीव विशेषाधिक	4	1	3	3	3
89.	वनस्पतिकाय के जीव विशेषाधिक	4	1	3	3	4

90.	एकेन्द्रिय जीव विशेषाधिक	4	1	5	3	4
91.	तिर्यंच जीव विशेषाधिक	14	5	13	9	6
92.	मिथ्यादृष्टि जीव विशेषाधिक	14	1	13	6	6
93.	अव्रती जीव विशेषाधिक	14	4	13	9	6
94.	सकषायी जीव विशेषाधिक	14	10	15	10	6
95.	छद्मस्थ जीव विशेषाधिक	14	12	15	10	6
96.	सयोगी जीव विशेषाधिक	14	13	15	12	6
97.	संसारी जीव विशेषाधिक	14	14	15	12	6
98.	समुच्चय जीव विशेषाधिक	14	14	15	12	6

98 बोल की अल्पबहुत्व सम्बन्धी उल्लेखनीय तथ्य

1. 98 बोलों की अल्पबहुत्व क्रमशः समझनी चाहिए। इनमें यह बतलाया गया है कि एक के बाद दूसरा बोल कितना गुणा अधिक है।
2. जिन बोलों की अल्पबहुत्व इस थोकड़े में बतलायी है, वह तभी सम्भव होगी, जबकि जिससे तुलना कर अल्पबहुत्व कही गई है, वे दोनों बोल अपनी उत्कृष्ट अवस्था में विद्यमान हों। जैसे-23वाँ बोल है-दूसरी नरक के नेरइये असंख्यात गुण तथा 24वाँ बोल है-सम्मूर्च्छिम मनुष्य असंख्यात गुण। इन दोनों बोलों में उक्त अल्पबहुत्व तभी सम्भव है जबकि 23वाँ तथा 24वाँ दोनों अपनी-अपनी उत्कृष्ट अवस्था में विद्यमान हों।
3. 98 बोलों में कुछ बोल अशाश्वत भी हैं, जैसे-24वाँ-विरह की अपेक्षा, 95वाँ-श्रेणि में विरह की अपेक्षा, 97वाँ-14वें गुणस्थान में विरह की अपेक्षा।

   24वाँ बोल सम्मूर्च्छिम मनुष्य असंख्यात गुणा है। जब 24 मुहूर्त्त का उत्कृष्ट विरह पड़ता है तब यह बोल मिलता ही नहीं है।

   95 वाँ बोल छद्मस्थ जीव विशेषाधिक है। यह अल्पबहुत्व 94 वें बोल की अपेक्षा तुलना करने पर घटित होती है। इन दोनों बोलों की अल्पबहुत्व भी तभी सम्भव है, जब श्रेणी करने वाले

जीव ग्यारहवें अथवा बारहवें गुणस्थान में हों। उपशम श्रेणि व क्षपक श्रेणि दोनों ही शाश्वत नहीं हैं। इनमें भी उपशम श्रेणि का पृथक्त्व वर्ष का तथा क्षपक श्रेणि का 6 माह का उत्कृष्ट विरह पड़ सकता है। अतः विरह काल में 94वाँ से 95वाँ बोल विशेषाधिक न होकर समान ही होंगे।

97वाँ बोल-संसारी जीव विशेषाधिक है। यह अल्पबहुत्व 96वें बोल की अपेक्षा तुलना करने पर बनती है। यह तभी सम्भव है जबकि चौदहवें-अयोगी केवली गुणस्थान में जीव रहे। 14वाँ गुणस्थान शाश्वत नहीं है। सिद्धों के विरह के समान इसमें भी उत्कृष्ट 6 माह का विरह पड़ता है तब 14वाँ गुणस्थान भी नहीं मिलेगा। उस समय 14वें गुणस्थान में अयोगी जीव नहीं होने से 96-97वें बोल की अल्पबहुत्व विशेषाधिक न होकर दोनों की एक समान ही होगी।

4. बोल क्रमांक 54,60,72 और 73 ये चारों निगोदिया जीवों के औदारिक शरीर की अपेक्षा से समझने चाहिए। क्योंकि उनके औदारिक शरीर असंख्यात ही होते हैं। ये चारों बोल निगोद कहलाते हैं।
5. बोल क्रमांक 82,84,88 सूक्ष्म व साधारण वनस्पतिकाय के जीवों अर्थात् निगोदिया जीवों की अपेक्षा से समझने चाहिए, क्योंकि इन तीनों बोलों में निगोदिया जीव अनन्त-अनन्त होते हैं।
6. असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पर्याप्त जीव मरकर पहली नारकी, भवनपति तथा वाणव्यन्तर देवों में जाकर उत्पन्न हो सकते हैं। ऐसे जीव अपर्याप्त अवस्था में कुछ समय असन्नी रहते हैं, इस अपेक्षा से पहली नारकी, भवनपति, वाणव्यन्तर देवों में जीव के

3 भेद (असन्नी पंचेन्द्रिय का अपर्याप्त, सन्नी पंचेन्द्रिय का अपर्याप्त तथा सन्नी पंचेन्द्रिय का पर्याप्त) होते हैं।

7. यद्यपि असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव मरकर भवनपति, वाणव्यन्तर में देवी भी बन सकता है, किन्तु नपुंसक अवस्था तक उसकी गणना देवी में नहीं करके देवों में ही की जाती है, वह भी मात्र अन्तर्मुहूर्त्त के लिए होती है। जिस प्रकार से इसी थोकड़े के पहले बोल सबसे थोड़े गर्भज मनुष्य में नपुंसकवेदी मनुष्य को भी सम्मिलित किया गया है, किन्तु मनुष्यिनी के बोल में नपुंसक वेदी मनुष्य की गणना नहीं की। उसी प्रकार देवी में भी नपुंसकवेदी असन्नी पंचेन्द्रिय की गणना नहीं की। अतः देवी में जीव के भेद-2 (सन्नी पंचेन्द्रिय का अपर्याप्त व पर्याप्त) ही माने गये हैं।

1. विरह द्वार

(पन्नवणा सूत्र के छठे पद के आधार से)

नाम	विरह	
	जघन्य	उत्कृष्ट
चारों गति का विरह	1 समय	12 मुहूर्त्त
भवनपति से दूसरे देवलोक तक, पहली नरक, सम्मूर्च्छिम मनुष्य	1 समय	24 मुहूर्त्त
दूसरी नरक	1 समय	7 अहोरात्रि (रात-दिन)
तीसरी नरक	1 समय	15 अहोरात्रि
चौथी नरक	1 समय	1 माह
पाँचवी नरक	1 समय	2 माह
छठी नरक	1 समय	4 माह
सातवीं नरक	1 समय	6 माह
तीसरा देवलोक	1 समय	9 अहोरात्रि 20 मुहूर्त्त
चौथा देवलोक	1 समय	12 अहोरात्रि 10 मुहूर्त्त
पाँचवा देवलोक	1 समय	22.5 अहोरात्रि
छठा देवलोक	1 समय	45 अहोरात्रि
सातवाँ देवलोक	1 समय	80 अहोरात्रि
आठवाँ देवलोक	1 समय	100 अहोरात्रि
9-10 देवलोक	1 समय	संख्यात महीनों का
11-12 देवलोक	1 समय	संख्यात वर्षों का
9 ग्रैवेयक पहली त्रिक (1-3)	1 समय	संख्यात सैंकड़ों वर्षों का
दूसरी त्रिक (4-6)	1 समय	संख्यात हजार वर्षों का
तीसरी त्रिक (7-9)	1 समय	संख्यात लाखों वर्षों का
4 अनुत्तर विमान	1 समय	पल्योपम का असंख्यातवां भाग
सर्वार्थसिद्ध विमान	1 समय	पल्योपम का संख्यातवां

		भाग
पाँच स्थावर	अविरह	अविरह
तीन विकलेन्द्रिय, असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय	1 समय	अन्तर्मुहूर्त्त
सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय, सन्नी मनुष्य	1 समय	बारह मुहूर्त्त
64 इन्द्र, सिद्ध भगवान	1 समय	छः माह
चन्द्र ग्रहण	6 माह	42 माह
सूर्य ग्रहण	6 माह	48 वर्ष
नवीन सम्यग् दृष्टि	1 समय	7 अहोरात्रि
नवीन श्रावक	1 समय	12 अहोरात्रि
नवीन साधु	1 समय	15 अहोरात्रि
भरत ऐरावत की अपेक्षा-चक्रवर्ती	देशोन 2,52,000 वर्ष	देशोन 18 कोड़ा कोड़ी सागरोपम
तीर्थंकर, 3 चारित्र (परि.वि., सू. सं.,यथा.)	84,000 वर्ष	देशोन 18 कोड़ा कोड़ी सागरोपम
बलदेव वासुदेव	2,52,000 वर्ष	देशोन 20 कोड़ा कोड़ी सागरोपम
चार तीर्थ, 5 महाव्रत, 2 चारित्र (सामा., छेदो.)	63,000 वर्ष	देशोन 18 कोड़ा कोड़ी सागरोपम

उद्वर्तन अर्थात् निकलना। यह विरह द्वार के समान ही जानना चाहिए। अन्तर इतना है कि सिद्धों का उद्वर्तन नहीं होता। क्योंकि सिद्ध भगवान पुनः जन्म धारण नहीं करते। वैमानिक देवों में उद्वर्तन के स्थान पर च्यवन कहना।

विरह द्वार के थोकड़े से सम्बन्धी ज्ञातव्य तथ्य

1. जितने समय तक उस-उस गति-जाति आदि में एक भी जीव उत्पन्न नहीं हो, उस काल को 'विरह' कहते हैं। अथवा जितने समय तक अभाव रूप अवस्था होती है, उसे विरह कहते हैं।
2. चारों गतियों का उत्कृष्ट विरह बारह मुहूर्त्त बतलाया है, जिसका तात्पर्य है कि बारह मुहूर्त्त के बाद तो कोई न कोई जीव एक गति से दूसरी गति में उत्पन्न होता ही है।
3. संग्रहणी वृत्ति के आधार से तथा क्षेत्रलोक प्रकाश (उत्तरार्ध) सर्ग 27 श्लोक सं. 439 से 442 तथा 478 के आधार से नवमें देवलोक से लेकर नव ग्रैवेयक तक का विरह इस प्रकार समझना चाहिए-

नवमें देवलोक का उत्कृष्ट विरह	संख्यात मास अर्थात् एक वर्ष के अन्दर
दसवें देवलोक का उत्कृष्ट विरह	संख्यात मास अर्थात् एक वर्ष से कुछ अधिक
ग्यारहवें देवलोक का उत्कृष्ट विरह	संख्यात वर्ष अर्थात् 100 वर्ष के अन्दर
बारहवें देवलोक का उत्कृष्ट विरह	संख्यात वर्ष अर्थात् 100 वर्ष से कुछ अधिक
नव ग्रैवेयक की प्रथम त्रिक का उत्कृष्ट विरह	संख्यात सौ वर्ष अर्थात् 1000 वर्ष के अन्दर
नव ग्रैवेयक की मध्यम त्रिक का उत्कृष्ट विरह	संख्यात हजार वर्ष अर्थात् 1 लाख वर्ष के अन्दर
नव ग्रैवेयक की अन्तिम त्रिक का उत्कृष्ट विरह	संख्यात लाख वर्ष अर्थात् 1 करोड़ वर्ष के अन्दर

चार अनुत्तर विमान के देवों का विरह- भगवती शतक 5 उद्देशक 8 में विरह से दुगुना अवस्थान काल बताया गया है। जैसे पहली नारकी का 24 मुहूर्त्त का विरह तथा अवस्थान काल 48 मुहूर्त्त का बताया है। इसी प्रकार तीसरे देवलोक का अवस्थान काल 18 रात-दिन तथा 40 मुहूर्त्त का बताया, आगे भी दुगुना अवस्थान काल बताया है।

अवस्थान काल से तात्पर्य जीवों की यथा स्थिति से है। अर्थात् विरह काल में जीव आते जाते नहीं तथा विरह काल के बाद भी उतने ही काल तक ऐसा हो सकता है कि जितने जीव जन्म लेते हैं, उतने ही वापस निकल जाते हैं। अर्थात जीवों की संख्या उतनी ही बनी रहती है, उसमें हानि वृद्धि नहीं होती, उस काल को अवस्थान काल कहते हैं। जैसे पहली नारकी में 24 मुहूर्त्त तक एक भी जीव उत्पन्न नहीं हुआ तथा निकला भी नहीं। अगले 24 मुहूर्त्त में 100 जीव उत्पन्न हुए और दूसरे 100 जीव निकल गये। इस प्रकार विरह काल से दुगने समय तक अर्थात् 48 मुहूर्त्त तक जीवों की संख्या पहली नारकी में एक समान रह जाने के कारण उसे अवस्थान काल कहा गया है। इसी प्रकार अन्यत्र भी समझ लेना चाहिए।

चार अनुत्तर विमान का अवस्थान काल असंख्यात हजारों वर्षों का है। इससे उनका विरह काल हजार असंख्यात काल सिद्ध हो जाता है। यह असंख्यात का भेद दूसरा असंख्यात अर्थात् मध्यम परीत्त असंख्यात समझना चाहिए। वह ग्रैवेयक के ऊपरी त्रिक से संख्यात गुणा ही होगा।

सर्वार्थसिद्ध विमान का उत्कृष्ट अन्तर पल्योपम का संख्यातवां भाग है। वह चार अनुत्तर विमान के अन्तर से असंख्यात गुणा बड़ा है, क्योंकि सर्वार्थसिद्ध में चार अनुत्तर विमान से असंख्यात गुणे कम देवता होते हैं।

4. तीन विकलेन्द्रिय और पाँच असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्कृष्ट विरह अन्तर्मुहूर्त्त का होता है। साथ ही इन जीवों के अपर्याप्त व पर्याप्त दोनों ही भेद शाश्वत भी होते हैं। इसका कारण यह है कि यद्यपि अपर्याप्त अवस्था का काल भी अन्तर्मुहूर्त्त है तथा विरह का काल भी अन्तर्मुहूर्त्त है तथापि अपर्याप्त अवस्था का अन्तर्मुहूर्त्त बड़ा होता है तथा विरह का अन्तर्मुहूर्त्त छोटा होता है। इसलिए विरह काल में भी तीन विकलेन्द्रिय और असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में भी शाश्वत होते हैं। पर्याप्त अवस्था में लम्बी स्थिति होने से वे शाश्वत होते ही हैं।
5. सन्नी (गर्भज) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्कृष्ट विरह बारह मुहूर्त्त का होता है। उनकी अपर्याप्त अवस्था की स्थिति अन्तर्मुहूर्त्त ही होती है। अपर्याप्त अवस्था की स्थिति से विरहकाल की स्थिति अधिक होने के कारण सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में शाश्वत नहीं हो सकते।
6. सिद्ध गति का उत्कृष्ट विरह छह मास का बतलाया है। अर्थात् छह मास के बाद अवश्य ही कोई न कोई कर्मभूमिज सन्नी मनुष्य सिद्ध होता ही है। 64 इन्द्रों में छह मास से अधिक पद खाली नहीं रहता, इसलिए इनका विरह भी उत्कृष्ट छह माह का माना गया है। 64 इन्द्रों के विरह का उल्लेख भगवती सूत्र श.8 उद्दे. 8 में तथा जीवाभिगम सूत्र की तीसरी प्रतिपत्ति द्वीपसमुद्र उद्देशक में मिलता है।
7. ग्रहण सम्बन्धी विरह निम्नानुसार समझना चाहिए –

		विरह	
क्र.सं.	ग्रहण	जघन्य	उत्कृष्ट
1.	कोई भी ग्रहण की अपेक्षा	15 दिन	42 माह
2.	चन्द्रग्रहण की अपेक्षा	06 माह	42 माह

3.	सूर्य ग्रहण की अपेक्षा	06 माह	48 वर्ष

सूर्यग्रहण भी 4 वर्ष (48 माह) में अवश्य हो जाता हैं अर्थात् उसका विरह 4 वर्ष से अधिक नहीं हो सकता। किन्तु यह ग्रहण अलग-अलग राशि पर होता है। एक ही राशि पर ग्रहण का उत्कृष्ट विरह 48 वर्ष का होता है।

चन्द्र और सूर्य ग्रहण के विरह का उल्लेख भगवती सूत्र शतक 12 उद्देशक 6 में किया गया है।

8. नवीन साधु का विरह - 1,3,4,5 गुणस्थान से 7वें गुणस्थान में आने की अपेक्षा समझना चाहिए।
नवीन श्रावक का विरह - 1,3,4,6 गुणस्थान से पाँचवें गुणस्थान में आने की अपेक्षा समझना चाहिए।
नवीन सम्यग्दृष्टि का विरह - पहले अथवा तीसरे गुणस्थान से चौथे आदि गुणस्थान में आने की अपेक्षा से समझना चाहिए।
नवीन साधु, श्रावक और सम्यग्दृष्टि के विरह का वर्णन विशेषावश्यक भाष्य में मिलता है।

9. चक्रवर्ती का विरह - तीर्थंकरों के अथवा तिरेसठ श्लाघनीय पुरुषों के आयु, अवगाहना, परस्पर के विरह (अन्तर) में कोई निश्चित अनुपात नहीं है। अवसर्पिणी काल होने से आयु, अवगाहना में कमी होना तो निश्चित है, परन्तु कमी का क्रम (अनुपात) निश्चित् नहीं है। जैसे कि-

बीसवें तीर्थंकर की आयु	-	30,000 वर्ष
इक्कीसवें तीर्थंकर की आयु	-	10,000 वर्ष
बाइसवें तीर्थंकर की आयु	-	1,000 वर्ष
तेइसवें तीर्थंकर की आयु	-	100 वर्ष
चौबीसवें तीर्थंकर की आयु	-	72 वर्ष

इनमें बीसवें व इक्कीसवें तीर्थंकर के बीच में 6 लाख वर्ष का अन्तर रहा। तथा इन दोनों की आयु में (30,000-10,000) 20,000 वर्ष का अन्तर रहा। इक्कीसवें तथा बाईसवें तीर्थंकर के बीच में 5 लाख वर्ष का अन्तर रहा तथा इन दोनों की आयु में (10,000-1,000) 9000 वर्ष का अन्तर रहा।

बाईसवें तथा तेइसवें तीर्थंकर के बीच में 83,750 वर्ष का अन्तर रहा तथा इन दोनों की आयु में (1,000-100) 900 वर्ष का अन्तर रहा। तेइसवें व चौबीसवें तीर्थंकर के बीच में 250 वर्ष का अन्तर रहा तथा इन दोनों की आयु में (100-72) 28 वर्ष का अन्तर रहा।

अतः निश्चित् अनुपात निकालना संभव नहीं है। चूंकि अन्तिम चक्रवर्ती, बलदेव-वासुदेव के बाद में होगा, इसलिए देशोन 2,52,000 वर्ष का जघन्य विरह कहा जा सकता है। निश्चित रूप से गणना करना शक्य नहीं।

10. बलदेव व वासुदेव का जघन्य विरह 2,52,000 वर्षों का इस प्रकार समझना चाहिए-

वर्तमान अवसर्पिणी काल के अन्तिम बलदेव व वासुदेव भगवान अरिष्टनेमि के समय में हुए हैं। उनसे भगवान महावीर स्वामी का अन्तर 84,000 वर्षों का, पाँचवाँ आरा 21,000 वर्षों का, छठा आरा 21,000 वर्षों का, उत्सर्पिणी काल का पहला और दूसरा आरा भी 21,000-21,000 वर्षों के हैं। उनके 84,000 वर्ष बाद उत्सर्पिणी काल के प्रथम बलदेव व वासुदेव होते हैं। सब मिलाकर विरह 84,000+84,000+84,000=2,52,000 वर्षों का हुआ।

11. तीर्थंकर, चक्रवर्ती, साधु, श्रावक आदि का उत्कृष्ट विरह देशोन 18 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का बतलाया, उसे इस प्रकार समझना चाहिए-

उत्सर्पिणी काल

चौथा आरा - 2 कोडाकोड़ी सागरोपम (लगभग 84 लाख पूर्व कम)

पाँचवा आरा- 3 कोड़ाकोड़ी सागरोपम

छठा आरा- 4 कोड़ाकोड़ी सागरोपम

= 9 कोड़ाकोड़ी सागरोपम (लगभग 84 लाख पूर्व कम)

अवसर्पिणी काल

पहला आरा- 4 कोड़ाकोड़ी सागरोपम

दूसरा आरा- 3 कोड़ोकोड़ी सागरोपम

तीसरा आरा)- 2 कोड़ाकोड़ी सागरोपम

= 9 कोड़ाकोड़ी सागरोपम (84 लाख पूर्व कम)

इस प्रकार 18 कोड़ाकोड़ी सागरोपम में लगभग 85 लाख पूर्व कम होने से देशोन 18 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का उत्कृष्ट विरह होता है।

12. बलदेव व वासुदेव का उत्कृष्ट विरह देशोन 20 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का होता है, जिसे इस प्रकार समझा जा सकता है-

हर उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी के प्रथम व अन्तिम वासुदेव आदि (बलदेव, चक्रवर्ती और तीर्थंकर) अपने-अपने आरे के निश्चितकाल बीतने पर ही होते हैं, ऐसा मानने की परम्परा है। अवसर्पिणी काल के प्रथम वासुदेव भगवान

श्रेयांसनाथ के समय में हुए। उससे पहले की उत्सर्पिणी के अन्तिम वासुदेव 14वें तीर्थंकर के समय हुए होंगे, ऐसा माना जाता है। भगवान श्रेयांसनाथ से भगवान ऋषभदेव तक का अन्तर देशोन एक कोड़ाकोड़ी सागरोपम का, उनसे पूर्व हुए उत्सर्पिणी के अन्तिम तीर्थंकर का अन्तर 18 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का (उत्सर्पिणी काल का चौथा आरा 2 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का + पाँचवां आरा 3 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का + छठा आरा 4 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का + अवसर्पिणी काल का पहला आरा 4 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का + दूसरा आरा 3 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का + तीसरा आरा 2 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का) उनसे उत्सर्पिणी काल के चौदहवें तीर्थंकर का समय देशोन एक कोड़ाकोड़ी का (उत्सर्पिणी के अन्तिम वासुदेव का समय) कुल मिलाकर देशोन 1+2+3+4+4+3+2+1 (देशोन) = देशोन (कुछ कम) 20 कोड़ाकोड़ी सागरोपम का उत्कृष्ट विरह हुआ।

दिशाणुवाइ का थोकड़ा

(दिशा की अपेक्षा जीवों का अल्पबहुत्व)

(पन्नवणा सूत्र तीसरा पद)

द्रव्य दिशा के अठारह भेद - 1. पूर्व, 2. पश्चिम, 3. उत्तर, 4. दक्षिण, 5. ईशानकोण, 6. नैर्ऋत्य कोण, 7. आग्नेय कोण, 8. वायव्य कोण, 9-16. आठ दिशाओं के आठ अन्तर, 17. विमला (ऊँची दिशा) और 18. तमा (नीची दिशा)।

भाव दिशा के अठारह भेद - 1. पृथ्वीकाय, 2. अप्काय, 3. तेउकाय (तेजस्काय), 4. वायुकाय, 5. अग्रबीज, 6. मूलबीज, 7. पर्वबीज, 8. स्कंधबीज, 9. द्वीन्द्रिय, 10. त्रीन्द्रिय, 11. चतुरिन्द्रिय, 12. तिर्यंच पंचेन्द्रिय, 13. कर्मभूमि, 14. अकर्मभूमि, 15. अन्तरद्वीप, 16. सम्मूर्च्छिम मनुष्य, 17. नारकी और 18. देवता।

1. **प्रश्न** - समुच्चय जीव, वनस्पतिकाय, अप्काय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और तिर्यंच पंचेन्द्रिय-इन सात बोलों के जीव किस दिशा में थोड़े हैं, किस दिशा में अधिक हैं ?
   उत्तर - सबसे थोड़े पश्चिम दिशा में है। कारण यह है कि पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन का गौतम द्वीप है। इसलिये पश्चिम दिशा में अप्काय के जीव थोड़े हैं और इस कारण सातों ही बोल के जीव थोड़े हैं। पूर्व दिशा में इनसे विशेषाधिक हैं। पूर्व दिशा में गौतम द्वीप नहीं है, इस कारण अप्काय अधिक है और इसलिए सात ही बोलों के जीव विशेषाधिक हैं। दक्षिण दिशा में इनसे विशेषाधिक हैं। दक्षिण दिशा में चंद्र सूर्य के द्वीप नहीं हैं, इसलिये अप्काय अधिक है और इसीलिये सात बोलों के जीव विशेषाधिक हैं। उत्तर दिशा में

इनकी अपेक्षा विशेषाधिक हैं। कारण यह है कि उत्तर दिशा में संख्यात द्वीप समुद्र आगे जाने पर अरुणवर नामक द्वीप आता है। इस द्वीप में मानस नामक एक सरोवर है जो संख्यात कोटाकोटि (कोड़ाकोड़ी) योजन लम्बी चौड़ी है। इस सरोवर के कारण उत्तर दिशा में अप्काय अधिक है और इसलिये सात बोलों के जीव विशेषाधिक हैं।

2. **प्रश्न** – पृथ्वीकाय के जीव किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

   उत्तर – दक्षिण दिशा में पृथ्वीकाय के जीव सबसे थोड़े हैं। इस दिशा में भवनपतियों के 4,06,00,000 भवन हैं तथा नरकावास भी अधिक हैं अतः पोलार अधिक है पृथ्वीकाय थोड़ी है। उत्तरदिशा में इनकी अपेक्षा विशेषाधिक हैं। उत्तर दिशा में भवनपतियों के 3,66,00,000 भवन हैं तथा नरकावास भी कम हैं अतः पोलार कम है, पृथ्वीकाय अधिक है। पूर्व दिशा में इनसे विशेषाधिक हैं। पूर्व दिशा में पृथ्वी अधिक कठोर है। पश्चिम दिशा में इनसे विशेषाधिक हैं। कारण यह है कि पश्चिम दिशा में लवण समुद्र में बारह हजार योजन विस्तार वाला गौतम द्वीप है जो पृथ्वी रूप है।

3. **प्रश्न** – वायुकाय और व्यन्तर जाति के देवता किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

   उत्तर – सबसे थोड़े पूर्व दिशा में हैं। पूर्वदिशा में पृथ्वी अधिक कठोर है इसलिये वायुकाय थोड़ी है और व्यन्तर देवता भी थोड़े हैं। इनकी अपेक्षा पश्चिम दिशा में विशेषाधिक हैं। पश्चिम दिशा में सलिलावती एवं वप्रा विजय है जो एक हजार योजन गहरी और तिर्छी है जिसमें वायुकाय भी अधिक है और व्यन्तर देवता भी अधिक हैं। इनकी अपेक्षा उत्तर दिशा में विशेषाधिक हैं। उत्तर

दिशा में 3,66,00,000 भवनपति देवों के भवन हैं तथा नरकावास अधिक हैं इसलिये पोलार अधिक है। पोलार अधिक होने से वायुकाय अधिक है और व्यन्तर देवों के स्वस्थान होने से नगर भी अधिक हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिण दिशा में विशेषाधिक हैं। दक्षिण दिशा में भवनपति देवों के 4,06,00,000 भवन हैं एवं नरकावास अधिक हैं इस कारण पोलार और अधिक है। पोलार अधिक होने से वायुकाय भी अधिक है और व्यन्तर देवों के नगर भी अधिक हैं। यहां कृष्णपक्षी जीव अधिक उत्पन्न होते हैं।

4. **प्रश्न** - मनुष्य, मनुष्य स्त्री, बादर तेउकाय और सिद्ध भगवान् किस दिशा में थोड़े हैं ? किस दिशा में अधिक हैं ?

   उत्तर - सबसे थोड़े दक्षिण और उत्तर दिशा में हैं। सब क्षेत्रों में भरत और ऐरवत क्षेत्र छोटे हैं उनमें मनुष्य थोड़े हैं, मनुष्य के वास थोड़े हैं, बादर तेउकाय थोड़ी है और वहाँ से थोड़े जीव सिद्ध होते हैं। इनकी अपेक्षा पूर्व दिशा में संख्यात गुणा हैं। पूर्वदिशा में पूर्व महाविदेह क्षेत्र बड़ा हैं। उसमें मनुष्य अधिक हैं, मनुष्य के वास अधिक हैं, बादर तेउकाय अधिक है और वहां से बहुत जीव सिद्ध होते हैं इसलिये पूर्व दिशा में संख्यात गुणा कहा है। इनकी अपेक्षा पश्चिम दिशा में विशेषाधिक है। पश्चिम दिशा में पश्चिम महाविदेह क्षेत्र है जिसमें सलिलावती एवं वप्रा विजय है जो एक हजार योजन गहरी (ऊंडी) तिर्छी है। वहां मनुष्य बहुत हैं, मनुष्य के वास बहुत हैं, बादर तेउकाय अधिक है और वहां से बहुत जीव सिद्ध होते हैं।

5. **प्रश्न** - भवनपति देव और देवियां किस दिशा में थोड़े हैं और किस दिशा में अधिक हैं ?

उत्तर – सबसे थोड़े पूर्व पश्चिम दिशा में हैं। पूर्व पश्चिम दिशा में भवनपति देवों के भवन नहीं है। केवल आते जाते हैं। इसकी अपेक्षा उत्तरदिशा में असंख्यात गुणा हैं क्योंकि उत्तरदिशा में 3,66,00,000 भवनपति देवों के भवन हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिणदिशा में असंख्यात गुणा हैं। दक्षिण दिशा में भवनपति देवों के 4,06,00,000 भवन हैं अतः असंख्यातगुणा बतलाये हैं। यहाँ कृष्णपक्षी अधिक उत्पन्न होते हैं।

6. **प्रश्न** – ज्योतिषी देव किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

   उत्तर – सबसे थोड़े पूर्व पश्चिम दिशा में हैं क्योंकि विमान दूर दूर हैं तथा इन दोनों दिशाओं में चन्द्र सूर्य के द्वीप बगीचे जैसे हैं अतः यहां ज्योतिषी देव थोड़े हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिण दिशा में ज्योतिषी देव विशेषाधिक हैं। क्योंकि यहां ज्योतिषी देवों के विमान अधिक हैं एवं कृष्णपक्षी जीव अधिक उत्पन्न होते हैं। इनकी अपेक्षा उत्तर दिशा में विशेषाधिक हैं, इस दिशा में ज्योतिषियों के विमान बहुत अधिक हैं एवं पास-पास हैं। उत्तर दिशा में संख्यात द्वीप समुद्र आगे जाने पर अरुणवर नामक द्वीप आता है। इस द्वीप में मानस नामक एक सरोवर है जो संख्याता कोटाकोटि (कोड़ाकोड़ी) योजन लम्बा-चौड़ा है। मानस सरोवर के रत्नों की पाल है। यहां बहुत से ज्योतिषी देव स्नान, मंजन, क्रीडा, कौतुक के लिये आते हैं। इन्हें देख कर वहां के तिर्यंच जीवों को जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न होता है। वे करणी करके निदान करते हैं और यहां ज्योतिषी देवों में उत्पन्न होते हैं। इसलिये विशेषाधिक हैं।

7. **प्रश्न** – पहले, दूसरे, तीसरे और चौथे देवलोक के देवता किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?

उत्तर – सबसे थोड़े पूर्व पश्चिम दिशा में हैं। इन देवलोकों में दो तरह के विमान होते हैं–आवलिका प्रविष्ट विमान और पुष्पावकीर्ण विमान। आवलिका प्रविष्ट विमान चारों दिशाओं में तुल्य हैं पर पुष्पावकीर्ण विमान पूर्व पश्चिम दिशा में कम हैं। इनकी अपेक्षा उत्तर दिशा असंख्यात गुणा हैं। उत्तर दिशा में बहुत से पुष्पावकीर्ण विमान हैं। इनकी अपेक्षा दक्षिण दिशा में विशेषाधिक हैं। दक्षिण दिशा में पुष्पावकीर्ण विमान अधिक हैं तथा यहां कृष्णपक्षी भी बहुत उत्पन्न होते हैं।

8. **प्रश्न** – पांचवे, छठें, सातवें और आठवें देवलोक के देवता किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?
   उत्तर – सबसे थोड़े पूर्व, पश्चिम, उत्तर दिशा में हैं। इन दिशाओं में पुष्पावकीर्ण विमान कम हैं और कृष्णपाक्षिक जीव कम उत्पन्न होते हैं इसलिये थोड़े हैं। दक्षिण दिशा में इनकी अपेक्षा असंख्यात गूणा हैं। इस दिशा में पुष्पावकीर्ण विमान अधिक हैं और यहां कृष्णपक्षी तिर्यंच योनि के जीव बहुत उत्पन्न होते हैं। आवलिका प्रविष्ट विमान चारों दिशाओं में तुल्य हैं।
9. **प्रश्न** – नववें देवलोक से सर्वार्थसिद्ध विमान के देवता किस दिशा में थोड़े हैं और किस दिशा में अधिक हैं?
   उत्तर – चारों दिशाओं में तुल्य हैं।
10. **प्रश्न** – पहली नारकी से सातवीं नारकी तक के नेरीये किस दिशा में थोड़े हैं? किस दिशा में अधिक हैं?
    उत्तर – सबसे थोड़े सातवीं नारकी के नेरीये पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा में हैं। इन दिशाओं में नेरीये थोड़े हैं। इनकी अपेक्षा सातवीं नारकी के नेरीये दक्षिण दिशा में असंख्यात गुणा हैं। इस दिशा में कृष्ण पाक्षिक जीव भी बहुत उत्पन्न होते हैं। सातवीं नारकी के दक्षिण दिशा के नेरियों की अपेक्षा छठी नारकी के पूर्व पश्चिम

उत्तर दिशा में नेरीये असंख्यात गुणा हैं और उनकी अपेक्षा छठी नारकी में दक्षिण दिशा के नेरीये असंख्यात गुणा हैं। सबसे उत्कृष्ट पाप करने वाले संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच और मनुष्य सातवीं नारकी में उत्पन्न होते हैं जो थोड़े हैं। उनसे कुछ हीन हीनतर पाप करने वाले छठी पांचवीं आदि नारकियों में उत्पन्न होते हैं और वे उत्तरोत्तर अधिक हैं। इसलिए सातवीं नारकी के दक्षिण दिशा के नेरियों से छठी नारकी के पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा के नेरीये असंख्यात गुणा बताए हैं। इनकी अपेक्षा छठी नारकी के दक्षिण दिशा के नेरीये असंख्यात गुणा हैं। कारण जो ऊपर सातवीं नारकी के वर्णन में बताया है वही समझना। इसी तरह पांचवीं, चौथी, तीसरी, दूसरी और पहली नारकी में भी पूर्व पश्चिम उत्तर दिशा में पूर्ववर्ती नारकी के दक्षिण दिशा के नेरियों से असंख्यात गुणा तथा उनसे दक्षिण दिशा के नेरिये असंख्यात गुणा कहना।

ज्ञातव्य :-

जत्थ जलं तत्थ वणं -

यह सामान्य विधेयात्मक वाक्य है। जहाँ जल है, वहाँ वन हो सकता है। अर्थात् जल के अभाव में वन की कोई संभावना नहीं। इसका यह अभिप्राय नहीं है कि जहाँ-जहाँ जल होगा, वहाँ-वहाँ वन होगा ही। प्रज्ञापना सूत्र के पद 2 में बादर अप्काय पर्याप्तक के स्थान और बादर वनस्पतिकाय पर्याप्तक के स्थान समान प्रायः बतलाये हैं। उनमें से अधिकांश स्थान बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय में भी बतलाये हैं।

पर इसका यह अभिप्राय नहीं है कि पानी के हर एक स्थान में ये जीव होंगे ही। क्योंकि ये जीव बादर नाम कर्म के उदय वाले जीव हैं, जिनके द्वारा परस्पर अवरोध-उत्पन्न होता है। अर्थात् एक हजार योजन की अवगाहना वाला मच्छ जिस क्षेत्र को अवगाहित करके रहेगा, वहाँ

क्वचित् किंचित् पोलार आदि स्थान में पर्याप्त बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय आदि के स्थान मिल सकते हैं। अन्यथा वे वहाँ नहीं हो सकते।

हरी का त्याग करने वाला भी कच्चे पानी का त्यागी हो, यह अनिवार्य नहीं। यदि प्रत्येक कच्चे पानी में वनस्पति मानी जाय तब तो कच्चे पानी के सेवन करने वाले को हरी का त्याग हो ही नहीं पायेगा। अतः यह समझना चाहिए कि पानी के आधार से इन जीवों के अवस्थान की प्रधानता बताई गई है। पर प्रत्येक पानी में इन जीवों की नियमा नहीं हो सकती।

वनस्पति के लिए पानी की अनिवार्यता हो सकती है, किन्तु प्रत्येक पानी में वनस्पति की नियमा नही हो सकती।

छः काय का थोकड़ा (पन्नवणा सूत्र से)

क्रम	नाम द्वार	गोत्र द्वार	स्वभाव	वर्ण	संस्थान द्वार	भव द्वार (एक मुहूर्त्त में)	स्थिति द्वार	योनि द्वार	कुल कोड़ी
1	इन्द्र स्थावर	पृथ्वीकाय	कठोर	पीला	मसूर की दाल	पृथ्वी., अप्., तेउ., वायु. वन., बेइ., तेइ., चउ. जीवों में 1 मुहूर्त्त में क्षुल्लक भव 256 आवलिका के 65536 तक हो सकते हैं। असन्नी पंचेन्द्रिय, सन्नी पंचेन्द्रिय में लगातार 8 भव से अधिक होने का निषेध है।	22000 वर्ष	7 लाख	12 लाख
2	ब्रह्म स्थावर	अप्काय	शीतलता	लाल	पानी के बुलबुले		7000 वर्ष	7 लाख	7 लाख
3	शिल्प स्थावर	तेऊकाय	उष्ण	सफेद	सुई की नोंक		3 अहोरात्रि	7 लाख	3 लाख
4	सम्मति स्थावर	वायुकाय	बाजना	हरा	ध्वजा पताका		3000 वर्ष	7 लाख	7 लाख
5	प्राजापत्य स्थावर	वनस्पति काय	नाना प्रकार	काला	नानाप्रकार		10,000 वर्ष	24 लाख	28 लाख
6	जंगमकाय	त्रसकाय	नाना प्रकार	नाना प्रकार	नानाप्रकार		बे.12 वर्ष ते.49 अहोरात्रि चौ.6 माह नारकी-देवता ज.10 हजार उ.33 सागर. ति.पं., मनु.- ज.अं.मु. उ. 3 पल्योपम	बे.2 लाख ते.2 लाख चौ.2 लाख नारकी- 4 लाख देवता- 4 लाख ति.पं.- 4 लाख मनु.- 14 लाख	बे.7 लाख ते.8 लाख चौ.9 लाख नारकी 25 लाख देवता 26 लाख ति.पं.53.5लाख मनु.12 लाख

अल्प-बहुत्व : सबसे थोडे त्रसकाय, उससे तेऊकाय असंख्यात गुणा, उससे पृथ्वीकाय विशेषाधिक, उससे अप्काय विशेषाधिक, उससे वायुकाय विशेषाधिक, उससे वनस्पतिकाय अनंतगुणा।

ज्ञातव्य :-

1. इस थोकड़े में दी गई भवों की संख्या भगवती श. 8, उद्दे . 9, भगवती शतक-24 (गमा), जीवाभिगम सूत्र की सातवीं अष्टविध प्रतिपत्ति, पाँचवें कर्मग्रन्थ की गाथा 40-41, अभिधान राजेन्द्र कोष आदि के आधार पर दी गई है। इससे स्पष्ट है कि क्षुल्लक भव औदारिक के दस ही दण्डकों में हो सकते हैं।
2. आवश्यक सूत्र की निर्युक्ति पर आचार्य हरिभद्रसूरि द्वारा लिखी गई टीका में एक मुहूर्त्त में पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय व वायुकाय इन सभी के 12824 भव तथा सूक्ष्म वनस्पति के 65536 भव, साधारण वनस्पति के 32000 भव, प्रत्येक वनस्पति के 16000 भव, बेइन्द्रिय के 80 भव, तेइन्द्रिय के 60 भव, चतुरिन्द्रिय के 40 भव, असन्नी पंचेन्द्रिय के 24 भव तथा सन्नी पंचेन्द्रिय का 1 भव बतलाया गया है।
3. 1 मुहूर्त्त में 65,536 भव एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय और चौरेन्द्रिय में जघन्य स्थिति के हो सकते हैं। तिर्यंच पंचेन्द्रिय और मनुष्य में तो लगातार 8 भव से अधिक नहीं हो सकते हैं। (गमा का अधिकार तथा उत्तराध्ययन 10/13)
4. औदारिक के दस दण्डक (पाँच स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, असन्नी-सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय और असन्नी-सन्नी मनुष्य) के जीवों की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त होती है। थोकड़े में जो स्थिति बतलाई गई वह उत्कृष्ट है।
5. योनि :- जीवों के उत्पत्ति-स्थान को 'योनि' कहते हैं। अथवा जो जीव उत्पत्ति के समय तैजस-कार्मण शरीर को जिस शरीर के साथ मिश्रित करता है, उसे भी योनि कहते हैं। नरक, देव गति में वैक्रिय शरीर के साथ तथा मनुष्य, तिर्यंच गति में औदारिक शरीर के साथ मिश्रित करता है। (प्रज्ञापना सूत्र 9 वाँ पद की टीका)
6. कुल :- एक उत्पत्ति स्थान में अनेक प्रकार के जीव पैदा होते हैं, उसे 'कुल' कहते हैं। जैसे- गाय, भैंस आदि के गोबर में लट, गिंडोला, बिच्छु आदि अनेक जीव पैदा हो सकते हैं।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : छठी- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 08 जनवरी, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(i) अनन्तानुबंधी क्रोध का बंध उत्कृष्ट कितने सागरोपम का है-
(क) 40 कोटाकोटि (ख) 70 कोटाकोटि
(ग) 20 कोटाकोटि (घ) 10 कोटाकोटि (क)

(ii) संज्ञी पंचेन्द्रिय में साता वेदनीय का उत्कृष्ट अबाधाकाल होगा-
(क) अन्तर्मुहूर्त्त (ख) एक आवलिका
(ग) 1500 वर्ष (घ) 3000 वर्ष (ग)

(iii) एकेन्द्रिय मिथ्यात्व मोहनीय कर्म का उत्कृष्ट कितना बंध करता है-
(क) 100 सागर (ख) 50 सागर
(ग) 25 सागर (घ) 1 सागर (घ)

(iv) प्रथम गुणस्थान में संज्ञी जीव कम से कम कितनी स्थिति का बंध करता है-
(क) 1 सागर (ख) 1 कोटाकोटि सागर
(ग) अन्तःकोटाकोटि सागर (घ) अन्तर्मुहूर्त्त (ग)

(v) उच्च गोत्र का जघन्य स्थिति बंध कब होता है-
(क) प्रथम गुणस्थान में (ख) छठे-सातवें गुणस्थान में
(ग) दसवें गुणस्थान में (घ) तेरहवें गुणस्थान में (ग)

(vi) छद्मस्थ जीव में गुणस्थान पाये जाते हैं-
(क) 10 (ख) 12
(ग) 13 (घ)5 (ख)

(vii) सकषायी जीव किससे विशेषाधिक है-
(क) सयोगी से (ख) छद्मस्थ से
(ग) अव्रती से (घ) संसारी जीव से (ग)

(viii) बादर अप्काय के अपर्याप्त में कितनी लेश्याएँ मिलती हैं-
(क) तीन (ख) चार
(ग) छह (घ) एक (ख)

(ix) 64 इन्द्रों का जघन्य विरह है-
(क) अन्तर्मुहूर्त्त (ख) 1 समय
(ग) 6 माह (घ) 15 अहोरात्रि (ख)

(x) पृथ्वीकाय का स्वभाव होता है-
(क) उष्ण (ख) नाना प्रकार का
(ग) कठोर (घ) शीतल (ग)

(xi) वनस्पतिकाय का रंग होता है-
(क) हरा (ख) लाल
(ग) पीला (घ) काला (घ)

(xii) तेउकाय की कुल कोड़ी है-
(क) 7 लाख (ख) 3 लाख
(ग) 28 लाख (घ) 7 लाख (ख)

(xiii) जंगमकाय का गोत्र है-
(क) वायुकाय (ख) त्रसकाय
(ग) अप्काय (घ) तेऊकाय (ख)

(xiv) इस अवसर्पिणी के अंतिम बलदेव तथा भगवान महावीर में कितने वर्षों का अन्तर है-
(क) 21000 (ख) 63000
(ग) 84000 (घ) 42000 (ग)

(xv) सम्मूर्च्छिम मनुष्य का अधिकतम विरह है-
(क) 12 मुहूर्त्त (ख) 24 मुहूर्त्त
(ग) 1 मुहूर्त्त (घ) अन्तर्मुहूर्त्त (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1=(15)

(i) मनुष्य आयु का उत्कृष्ट स्थिति बंध विशुद्ध परिणामों में होता है। (हाँ)

(ii) दर्शन मोहनीय की तीनों प्रकृति कांक्षा मोहनीय के नाम से जानी जाती है। (हाँ)

(iii) तिर्यंच जीव तिर्यंच आयु को बांधे तो जघन्य अबाधाकाल 1 मुहूर्त्त का होता है। (नहीं)

(iv) अप्रमत्त साधु अहारक शरीर का उत्कृष्ट बंध अन्तःकोटाकोटि सागरोपम करते हैं। (हाँ)

(v) संज्ञी पंचेन्द्रिय के संज्वलन क्रोध का जघन्य बंध 1 महीने का है। (नहीं)

(vi) सिद्ध भगवन्तों से प्रतिपतित सम्यग्दृष्टि अनन्त गुणा है। (नहीं)

(vii) भवसिद्धिया से निगोदिया जीव अनन्त गुणे हैं। (नहीं)

(viii) सभी जीवों में सबसे कम मनुष्यिनी है। (नहीं)

(ix) तेउकाय के जीवों में कभी-कभी विरह पड़ता है। (नहीं)

(x) 15 अहोरात्रि में तो कोई न कोई साधु बनता ही है। (हाँ)

(xi) प्रतिसमय कोई न कोई सिद्ध अवश्य बनता है। (नहीं)

(xii) चारों गति का उत्कृष्ट विरह 24 मुहूर्त्त है। (नहीं)

(xiii) सर्वार्थसिद्ध विमान के देव चारों दिशाओं में तुल्य है। (हाँ)

(xiv) पहली नारकी के नेरीये नारकी जीवों में सर्वाधिक हैं। (हाँ)

(xv) तिर्यंच जीव भी निदान कर सकते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिएः-

15x1=(15)

(i)	थलचर स्त्री	(क) योग 14	योग 13
(ii)	बादर निगोद पर्याप्त	(ख) लेश्या 6	योग 1
(iii)	पंचेन्द्रिय के पर्याप्त	(ग) 4000 वर्ष	योग 14
(iv)	भवनपति देव	(घ)1800 वर्ष	लेश्या 4
(v)	भवसिद्धिया	(च) योग 13	लेश्या 6
(vi)	बादर तेउकाय पर्याप्त	(छ) 1500 वर्ष	लेश्या 3

(vii)	अप्रत्याख्यानी क्रोध	(ज) 63000 वर्ष	4000 वर्ष
(viii)	हास्य	(झ) लेश्या 4	1000 वर्ष
(ix)	स्त्रीवेद	(य) 2000 वर्ष	1500 वर्ष
(x)	तिर्यंच गति	(र) 20 कोड़ाकोडी सागरोपम	2000 वर्ष
(xi)	सूक्ष्म	(ल) 100 अहोरात्रि	1800 वर्ष
(xii)	बलदेव	(व) योग 1	20 कोडाकोडी सागरोपम
(xiii)	सामायिक चारित्र	(क्ष) 12 अहोरात्रि 10 मुहूर्त्त	63000 वर्ष
(xiv)	आठवाँ देवलोक	(त्र) 1000 वर्ष	100 अहोरात्रि
(xv)	चौथा देवलोक	(ज्ञ) लेश्या 3	12 अहोरात्रि 10 मुहूर्त्त

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i) मेरे साम्परायिक और ईर्यापथिक दो भेद हैं। — साता वेदनीय

(ii) मेरा उत्कृष्ट स्थिति बंध होने पर ही छह कर्मों का उत्कृष्ट स्थिति बंध होता है। — मोहनीय कर्म

(iii) मैं 22 प्रकृतियों का जघन्य स्थिति बंध इनके बंध विच्छेद के समय करता हूँ। — सन्नी मनुष्य/क्षपक श्रेणी

(iv) मैं ऐसा जीव हूँ जो आयुबंध हुए बिना भी मरण को प्राप्त कर सकता है। — चरम शरीरी

(v) संज्ञी पंचेन्द्रिय मेरी उत्कृष्ट 70 कोटाकोटि सागरोपम की स्थिति बाँधता है। — मिथ्यात्व मोहनीय

(vi) 98 बोलों में भवनपति देवों से अगला बोल असंख्यात गुणा मैं हूँ। — पहली नरक के नेरइये

(vii) मुझमें विरह द्वार के थोकड़े का अधिकार है। — पन्नवणा सूत्र/पन्नवणा सूत्र पद-6

(viii) 98 बोलों में मेरा क्रमाक 97 है। — संसारी जीव

(ix) 98 बोलों में मेरा क्रमाक 41 है। — ज्योतिषी देवी

(x) मुझे सिद्धों को छोड़कर अन्य जीवों के लिए विरह द्वार के समान ही जानना चाहिए। — उद्वर्तन

(xi) मुझमें उत्पन्न होने का उत्कृष्ट विरह पल्योपम का संख्यातवाँ भाग है। — सर्वार्थ सिद्ध विमान

(xii) मेरा उत्कृष्ट विरह 7 अहोरात्रि है। — सम्यग्दृष्टि/दूसरी नरक

(xiii) मैं अरुणवर नामक द्वीप के अन्तर्गत संख्यात कोटाकोटि योजन लम्बी-चौड़ी झील हूँ। — मानसरोवर

(xiv) मैं वह दिशा हूँ, जिसमें कृष्ण पक्षी बहुत उत्पन्न होते हैं। — दक्षिण

(xv) मैं जीवों की उत्पत्ति स्थान हूँ। — योनि

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 8x2=(16)

(i) एकेन्द्रिय में ज्ञानावरणीय की 5 प्रकृतियों का जघन्य स्थिति बंध लिखिए।

उ. 1 सागर का 3/7 भाग में पल्योपम का असंख्यात भाग कम

(ii) संज्ञी पंचेन्द्रिय के पुरुष वेद का जघन्य तथा उत्कृष्ट बंध लिखिए।

जघन्य-8 वर्ष एवं उत्कृष्ट-10 कोटाकोटि सागरोपम।

(iii) असंज्ञी पंचेन्द्रिय के नरक आयु का जघन्य स्थिति बंध लिखिए।

उ. 10000 वर्ष अन्तर्मुहूर्त्त अधिक

(iv) शुभ एवं अशुभ विहायोगति का समुच्चय जीव आश्री उत्कृष्ट अबाधाकाल लिखिए।

उ. शुभ विहायोगति का समुच्चय जीव आश्री उत्कृष्ट अबाधाकाल-1000 वर्ष

अशुभ विहायोगति का समुच्चय जीव आश्री उत्कृष्ट अबाधाकाल-2000 वर्ष

(v) बादर अपर्याप्त में जीव के भेद, गुणस्थान, योग एवं उपयोग लिखिए।

उ. बादर अपर्याप्त	जीव के भेद	गुणस्थान	योग	उपयोग
	6	3	5	9

(vi) पंचेन्द्रिय अपर्याप्त में जीव के भेद, गुणस्थान, योग एवं उपयोग लिखिए।

उ. पंचेन्द्रिय अपर्याप्त	जीव के भेद	गुणस्थान	योग	उपयोग
	2	3	5	9

(vii) वायुकाय किस दिशा में थोड़ी है और क्यों ?

सबसे थोड़े पूर्व दिशा में है। पूर्व दिशा में पृथ्वी अधिक कठोर है, इसलिए वायुकाय थोड़ी है।

(viii) पृथ्वीकाय एवं अप्काय का संस्थान लिखिए।

उ. पृथ्वीकाय का संस्थान- मसूर की दाल

अपकाय का संस्थान- पानी के बुलबुले

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(i) असंज्ञी पंचेन्द्रिय में छहों संस्थानों का उत्कृष्ट स्थिति बंध लिखिए।

उ. असंज्ञी पंचेन्द्रिय 6 संस्थान का उत्कृष्ट स्थिति बंध- 1000 सागर के 5/35, 6/35, 7/35, 8/35, 9/35, 10/35

(ii) एकेन्द्रिय में नपुंसक वेद का जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति बंध एवं अबाधाकाल लिखिए।

उ. जघन्य स्थिति- 1 सागर के 2/7 भाग में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम

उत्कृष्ट स्थिति- 1 सागर के 2/7 भाग

अबाधाकाल- अन्तर्मुहूर्त्त

(iii) द्वीन्द्रिय में नीच गोत्र का जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति बंध एवं अबाधाकाल लिखिए।

उ. जघन्य स्थिति- 25 सागर के 2/7 भाग में पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम

उत्कृष्ट स्थिति- 25 सागर के 2/7 भाग

अबाधाकाल- अन्तर्मुहूर्त्त

(iv) संज्ञी पंचेन्द्रिय में यशकीर्ति का जघन्य-उत्कृष्ट स्थिति बंध एवं अबाधाकाल लिखिए।

उ. जघन्य स्थिति- 8 मुहूर्त्त । उत्कृष्ट स्थिति- 10 कोटाकोटि सागरोपम। अबाधाकाल- 1000 वर्ष

(v) 98 बोलों में बोल क्रमांक 23,24,25 के नाम लिखिए।

उ. 23. दूसरी नरक के नेरइये असंख्यात गुणा।

24. सम्मूर्च्छिम मनुष्य असंख्यात गुणा।

25. दूसरे देवलोक के देव असंख्यात गुणा।

(vi) 98 बोलों में बोल क्रमांक 53,54,55 के नाम लिखिए।

उ. 53. प्रत्येक शरीरी बादर वनस्पतिकाय के पर्याप्त असंख्यात गुणा।

54. बादर निगोद के पर्याप्त असंख्यात गुणा।

55. बादर पृथ्वीकाय के पर्याप्त असंख्यात गुणा।

(vii) मनुष्य किस दिशा में सबसे थोड़े एवं किस दिशा में अधिक हैं ? कारण सहित लिखिए।

उ. मनुष्य सबसे थोड़े दक्षिण और उत्तर दिशा में है। सब क्षेत्रों में भरत और ऐरवत क्षेत्र छोटे हैं, उनमें मनुष्य थोड़े हैं, मनुष्य के वास थोड़े हैं। पूर्व दिशा में पूर्व महाविदेह क्षेत्र बड़ा है। उसमें मनुष्य अधिक हैं, मनुष्य के वास अधिक हैं। पश्चिम दिशा में पश्चिम महाविदेह क्षेत्र है, जिसमें सलिलावती एवं वप्रा विजय है जो एक हजार योजन गहरी (ऊंडी) तिर्छी है। वहाँ मनुष्य बहुत हैं, मनुष्य के वास बहुत हैं।

(viii) वनस्पतिकाय की स्थिति, योनि एवं कुलकोड़ी लिखिए।

उ.	वनस्पतिकाय	स्थिति	योनि	कुलकोड़ी
		10,000 वर्ष	24 लाख	28 लाख

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : छठी- जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2024)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) पुरुषवेद की उत्कृष्ट स्थिति कितनी होती है-
(क) 40 कोटाकोटि सागरोपम (ख) 20 कोटाकोटि सागरोपम
(ग) 15 कोटाकोटि सागरोपम (घ) 10 कोटाकोटि सागरोपम (घ)

(ii) चौदह गुणस्थानों को कौनसा जीव प्राप्त कर सकता है-
(क) सन्नी तिर्यंच (ख) सन्नी मनुष्य
(ग) युगलिक तिर्यंच (घ) युगलिक मनुष्य (ख)

(iii) चौरेन्द्रिय जीव मिथ्यात्व मोहनीय का उत्कृष्ट बंध करते हैं-
(क) 100 सागर (ख) 50 सागर
(ग) 25 सागर (घ) 1 सागर (क)

(iv) साता वेदनीय का जघन्य स्थिति बंध करते हैं-
(क) सन्नी मनुष्य (ख) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय
(ग) त्रीन्द्रिय (घ) एकेन्द्रिय (क)

(v) तिर्यंचायु की उत्कृष्ट स्थिति परिणामों में बंधती है-
(क) अशुद्ध (ख) अर्द्धशुद्ध
(ग) विशुद्ध (घ) संक्लेश (ग)

(vi) पहली नरक से नेरइये में जीव के भेद होते हैं-
(क) 1 (ख) 2
(ग) 3 (घ) 4 (ग)

(vii) भवी जीव अभवी जीव से गुणा अधिक है-
(क) विशेषाधिक (ख) संख्यात गुणा
(ग) असंख्यात गुणा (घ) अनन्त गुणा (घ)

(viii) क्षपक श्रेणि का उत्कृष्ट विरह हो सकता है-
(क) 6 माह (ख) 24 मुहूर्त
(ग) 49 दिन-रात (घ) 6 वर्ष (क)

(ix) चारों गति का उत्कृष्ट विरह होत11 है-
(क) 1 समय (ख) अन्तर्मुहूर्त
(ग) 2 माह (घ) 12 मुहूर्त (घ)

(x) कम से कम कितने काल में सूर्य ग्रहण होता ही है-
(क) 12 मुहूर्त (ख) 7 अहोरात्रि
(ग) 4 माह (घ) 6 माह (घ)

(xi) विरह काल से अवस्थान काल कितना अधिक होता है-
(क) दुगुना (ख) तीन गुणा
(ग) चार गुणा (घ) 10 गुणा (क)

(xii) दिसाणुवाइ के थोकड़े का आधार है-
(क) पन्नवणा सूत्र पद-1 (ख) पन्नवणा सूत्र पद-2
(ग) पन्नवणा सूत्र पद-3 (घ) पन्नवणा सूत्र पद-4 (ग)

(xiii) वायुकाय के जीव दिशा में सबसे कम हैं-
(क) पूर्व (ख) पश्चिम
(ग) उत्तर (घ) दक्षिण (क)

(xiv) इन्द्र स्थावर का गोत्र है-
(क) त्रसकाय (ख) पृथ्वीकाय
(ग) वायुकाय (घ) वनस्पतिकाय (ख)

(xv) मनुष्य की कितनी योनि होती हैं-
(क) 7 लाख (ख) 2 लाख
(ग) 10 लाख (घ) 14 लाख (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) एकेन्द्रिय में जघन्य स्थितिबंध उत्कृष्ट से पल्योपम के असंख्यातवें भाग कम होता है। (हाँ)

(ii) पुरूषवेद का जघन्य स्थितिबंध दसवें गुणस्थान के चरम समय में होता है। (नहीं)

(iii) 'एकेन्द्रिय' आतप नाम का बंध मोहनीयकर्म के अनुपात में सातिया दो भाग करता है। (हाँ)

(iv) दूसरे से आठवें गुणस्थान में जघन्य बंध अन्तःकोटाकोटी सागरोपम का होता है। (हाँ)

(v) अबाधाकाल का अपवर्तन नहीं हो सकता है। (नहीं)

(vi) मनुष्य से मनुष्यिनी अधिक होती है। (हाँ)

(vii) अपर्याप्त सूक्ष्म से पर्याप्त सूक्ष्म जीव अधिक होते हैं। (हाँ)

(viii) ऐसा भी हो सकता है, जब सम्पूर्ण लोक में एक भी सम्मूर्च्छिम मनुष्य नहीं हो। (हाँ)

(ix) 4 अनुत्तर विमान का उत्कृष्ट विरह पल्योपम का संख्यातवाँ भाग होता है। (नहीं)

(x) उद्वर्तन का अर्थ प्रवेश करना होता है। (नहीं)

(xi) 12 मुहूर्त के बाद कोई न कोई जीव एक गति से दूसरी गति में उत्पन्न होता ही है। (हाँ)

(xii) दक्षिण दिशा में भवनपतियों के 4 करोड़ 60 हजार भवन हैं। (नहीं)

(xiii) वप्रा विजय एक हजार योजन गहरी है। (हाँ)

(xiv) क्षुल्लक भव औदारिक के 10 दण्ड़क में हो सकता है। (हाँ)

(xv) तिर्यंच पंचेन्द्रिय के लगातार 9 भव नहीं हो सकते हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:-

15x1 = (15)

(i)	अभवी जीव	(क) 1500 वर्ष	26 प्रकृतियों की सत्ता
(ii)	सूक्ष्मत्रिक	(ख) 9 उपयोग	18 कोटाकोटी सागरोपम
(iii)	स्त्रीवेद	(ग) 1 माह	1500 वर्ष

(iv)	संज्वलन लोभ	(घ)30,000 वर्ष	40 कोटाकोटी सागरोपम
(v)	ज्ञानावरणीय-5	(च) काला वर्ण	3000 वर्ष
(vi)	खेचर पुरूष	(छ) बाजना	9 उपयोग
(vii)	प्रतिपाति सम्यग्दृष्टि	(ज) 12,000 योजन	2 गुणस्थान
(viii)	ज्योतिषी देवी	(झ) 26 प्रकृतियों की सत्ता	11 योग
(ix)	नवीन साधु	(य) चारों दिशाओं में तुल्य	15 अहोरात्रि
(x)	चौथी नरक	(र) 3000 वर्ष	1 माह
(xi)	बीसवें तीर्थंकर की आयु	(ल) 2 गुणस्थान	30,000 वर्ष
(xii)	गौतम द्वीप	(व) 15 अहोरात्रि	12,000 योजन
(xiii)	सर्वार्थसिद्ध विमान	(क्ष) 18 कोटाकोटी सागरोपम	चारों दिशाओं में तुल्य
(xiv)	वायुकाय	(त्र) 11 योग	बाजना
(xv)	प्राजापत्य स्थावर	(ज्ञ) 40 कोटाकोटी सागरोपम	काला वर्ण

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i)	मेरा बंध नहीं होता है।	मिश्र मोहनीय/समकित मोहनीय
(ii)	मेरा अबाधाकाल होता भी है और नहीं भी होता है।	आयुकर्म
(iii)	मेरी उत्कृष्ट स्थिति बंधने पर सभी कर्मों की उत्कृष्ट स्थिति बंधती है।	मोहनीय कर्म/मिथ्यात्व मोहनीय
(iv)	मेरी स्थिति जघन्य तथा उत्कृष्ट अंतः कोटाकोटी सागरोपम की है।	जिननाम/ आहारक चौक
(v)	मेरा जघन्य बंध क्षपक श्रेणि में बंध-विच्छेद के समय 15 दिन का होता है।	संज्वलन माया
(vi)	हमारे बोल तभी मिलते हैं जब हम उत्कृष्ट अवस्था में विद्यमान होते हैं।	23वाँ / 24वाँ बोल/सम्मुर्छिम मनुष्य
(vii)	मेरा 93 नम्बर का बोल है।	अव्रती
(viii)	मैं कभी मोक्ष नहीं जाऊँगा, मेरा बोल क्रमांक लिखिए।	74/अभवी
(ix)	मेरा विरह नहीं होता है।	5 स्थावर
(x)	प्रत्येक पानी में मेरी नियमा नहीं हो सकती।	वनस्पति
(xi)	हम चारों दिशाओं में एक समान होते हैं।	9वें देवलोक से सवार्थसिद्ध विमान के देवता/आवलिका प्रविष्ट विमान
(xii)	हम क्रीड़ा, कौतुक के लिए मानसरोवर पर आते हैं।	ज्योतिषी देव
(xiii)	मैं भाव दिशा के अन्तर्गत 14 वाँ भेद हूँ।	अकर्मभूमि
(xiv)	मेरी 28 लाख कुल कोड़ी होती है।	वनस्पति काय/प्राजापत्य स्थावर
(xv)	मेरा संस्थान सूई की नोंक के समान होता है।	तेउकाय/अग्नि/आग

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(i) अबाधाकाल को परिभाषित कीजिए।

कर्म बांधने के बाद अमुक समय तक किसी भी प्रकार के फल न देने की अवस्था को अबाधाकाल कहते हैं।

(ii) तिर्यंचायु और मनुष्यायु की उत्कृष्ट स्थिति लिखिए।

तीन पल्योपम तथा करोड़ पूर्व का तीसरा भाग अधिक

(iii) संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव संज्वलन लोभ का जघन्य तथा उत्कृष्ट बंध कितना करता है ?

जघन्य- अन्तर्मुहूर्त, उत्कृष्ट- 40 कोटाकोटि सागरोपम

(iv) 6 माह का अबाधाकाल कब घटित होता है?

नारकी, देवता यदि तिर्यंचायु, मनुष्यायु का बंध करे तो अबाधाकाल छह माह का होता है।

(v) आयु कर्म के सम्बन्ध में वर्णित विविधताओं में से कोई एक बिंदु लिखिए।

नोटः इनमें से कोई भी एक मान्य-

1. यह कर्म जीवन में एक बार बंधता है। अति जघन्य परिणामों में आयु का बंध नहीं होता तो अति विशुद्ध परिणामों में भी आयु का बंध नहीं होता। इन दोनों के मध्य में स्थित परिवर्तमान परिणाम (घोलमान परिणाम) में आयु का बंध होता है।

2. नारकी, देवता, युगलिक में 6 मास आयु शेष रहने पर तथा निरुपक्रमी मनुष्य-तिर्यंचों में वर्तमान भव की 1/3 भाग आयु शेष रहने पर बंधता है।

3. मनुष्य-तिर्यंच में सोपक्रमी आयुष्य वालों में अपनी आयु का तीसरा भाग शेष रहने पर अथवा नवाँ भाग अथवा सत्ताईसवाँ भाग अथवा इक्यासीवां भाग अथवा 243 वाँ भाग अथवा 729 वाँ भाग शेष रहने पर अथवा अन्तर्मुहूर्त आयु शेष रहने पर आयु बांधता है।

4. चरम शरीरी जीव को छोड़कर कोई भी जीव आयुष्य कर्म का बंध किये बिना मरण को प्राप्त नहीं होता है।

5. अपर्याप्त अवस्था में मरने वाले जीव भी कम से कम तीन पर्याप्ति पूर्ण करने के बाद ही आयुष्य बांधते हैं। आयुष्य बांधने के अन्तर्मुहूर्त बाद ही काल करते हैं।

6. आयुष्य बंध करने में अन्तर्मुहूर्त काल लगता है।

(vi) 98 बोल में से जो अशाश्वत बोल हैं, उन्हें लिखिए।

24वाँ- विरह की अपेक्षा, 95वाँ-श्रेणि में विरह की अपेक्षा, 97वाँ-14वें गुणस्थान में विरह की अपेक्षा।

(vii) बोल क्रमांक 54,60,72 और 73 संबंधी ज्ञातव्य लिखिए।

50,60,72 ये निगोदिया जीवों के औदारिक शरीर की अपेक्षा से समझने चाहिए। क्योंकि उनके औदारिक शरीर असंख्यात ही होते हैं। ये बोल निगोद कहलाते हैं।

(viii) 6 काय के थोकड़े से नाम द्वार तथा संस्थान द्वार लिखिए।

नाम द्वार- इन्द्र स्थावर, ब्रह्म स्थावर, शिल्प स्थावर, सम्मति स्थावर, प्राजापत्य स्थावर, जंगमकाय।

संस्थान द्वार- मसूर की दाल, पानी के बुलबुले, सूई की नोक, ध्वजा पताका, नाना प्रकार,नाना प्रकार।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(i) एकेन्द्रिय से असन्नी पंचेन्द्रिय तक के जघन्य व उत्कृष्ट बंध में विशेषता लिखिए।

एकेन्द्रिय से असन्नी पंचेन्द्रिय तक के जघन्य व उत्कृष्ट बंध में पल्योपम के असंख्यातवें भाग का अन्तर रहता है। अर्थात् जघन्य बंध, उत्कृष्ट बंध की अपेक्षा पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग कम होता है।

(ii) भगवती सूत्र तथा प्रज्ञापना सूत्र में आयु का अबाधाकाल क्यों नहीं बताया? कारण लिखिए।

आयु कर्म का अबाधाकाल जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट एक करोड़ पूर्व का तीसरा भाग तथा मृत्यु के जितने समय पहले आयु बांधे उतना ही अबाधाकाल समझ लेना चाहिए। नरकादि की जितनी आयु बताई, उससे जितनी बंध-स्थिति अधिक है, उतना ही अबाधाकाल स्पष्ट हो जाने से सूत्रकार ने नहीं बताया।

(iii) सातावेदनीय के भेद, स्थिति तथा अबाधाकाल लिखिए। (सन्नी पंचेन्द्रिय की अपेक्षा से)

सातावेदनीय के दो भेद- साम्परायिक और ईर्यापथिक।

साम्परायिक की स्थिति- जघन्य स्थिति 12 मुहूर्त की, उत्कृष्ट पन्द्रह कोटाकोटि सागरोपम की है।

अबाधाकाल- 1500 वर्षों का हैं। ईर्यापथिक की स्थिति दो समय की है, अबाधाकाल नहीं होता है।

(iv) एकेन्द्रिय जीव से समुच्चय जीव तक की केवल अल्पबहुत्व लिखिए।

बोल	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
एकेन्द्रिय जीव विशेषाधिक	4	1	5	3	4
तिर्यंच जीव विशेषाधिक	14	5	13	9	6
मिथ्यादृष्टि जीव विशेषाधिक	14	1	13	6	6
अव्रती जीव विशेषाधिक	14	4	13	9	6
सकषायी जीव विशेषाधिक	14	10	15	10	6
छद्मस्थ जीव विशेषाधिक	14	12	15	10	6
सयोगी जीव विशेषाधिक	14	13	15	12	6
संसारी जीव विशेषाधिक	14	14	15	12	6
समुच्चय जीव विशेषाधिक	14	14	15	12	6

(v) बोल क्रमांक 82,84 व 88 संबंधी ज्ञातव्य लिखिए।

बोल क्रमांक 82,84,88 सूक्ष्म व साधारण वनस्पतिकाय के जीवों अर्थात् निगोदिया जीवों की अपेक्षा से समझने चाहिए, क्योंकि इन तीनों बोलों में निगोदिया जीव अनन्त-अनन्त होते हैं।

(vi) सम्मूर्च्छिम मनुष्य तथा भवसिद्धिया की अल्पबहुत्व तथा इनमें जीव के भेद, गुणस्थान आदि लिखिए।

बोल	जीव	गुणस्थान	योग	उपयोग	लेश्या
सम्मूर्च्छिम मनुष्य असंख्यात गुणा	1	1	3	4	3
भवसिद्धिया विशेषाधिक	14	14	15	12	6

(vii) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में शाश्वत क्यों नहीं होते ? कारण लिखिए।

सन्नी (गर्भज) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में उत्कृष्ट विरह बारह मुहूर्त का होता है। उनकी अपर्याप्त अवस्था की स्थिति अन्तर्मुहूर्त की होती है। अपर्याप्त अवस्था की स्थिति से विरहकाल की स्थिति अधिक होने के कारण सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में शाश्वत नहीं हो सकते।

(viii) 9 ग्रैवेयक से सर्वार्थसिद्ध विमान तक के देवों का जघन्य तथा उत्कृष्ट विरह लिखिए।

नाम	जघन्य	उत्कृष्ट
9 ग्रैवेयक पहली त्रिक (1-3)	1 समय	संख्यात सैंकड़ों वर्षों का
दूसरी त्रिक(4-6)	1 समय	संख्यात हजार वर्षों का
तीसरी त्रिक(7-9)	1 समय	संख्यात लाखों वर्षों का
4 अनुत्तर विमान	1 समय	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
सर्वार्थसिद्ध विमान	1 समय	पल्योपम का संख्यातवाँ भाग

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड

गजेन्द्र निधि की इकाई(तत्त्वावधान-अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ)
सामायिक स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2630490, 2636763, WhatsApp No. 7610953735
email: shikshanboardjodhpur@gmail.com ● website : www.jainratnaboard.com

जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ा)

आवेदन-पत्र
(Application Form)

1. नाम श्री/श्रीमती/सुश्री
   (Name Shri/Smt./Miss)
2. पिता/पति का नाम
   (Name of Father/Husband)
3. पूरा पता (Postal Address)
   जिला (Dist.) राज्य (State)
   पिन कोड (Pin Code) ☐☐☐☐☐☐
4. STD Code .... (R) .... (O) ....
5. Mobile No. ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐
6. जन्म दिनांक (Date Of Birth) ☐☐☐☐☐☐☐☐
7. शिक्षा (Education)
8. कक्षा जिसमें परीक्षार्थी प्रवेश चाहता है
   (Class appearing)
9. **पूर्व परीक्षार्थी के रोल नं.**
   (Old Student Roll No.)
10. परीक्षा केन्द्र व कोड संख्या
    (Examination Centre & Code) ☐

दिनांक (Date) ....../...../..........

आवेदक के हस्ताक्षर
(Signature of Applicant)

यहाँ से काटिये

1. वरीयता सूची में स्थान पाने वालों को विशेष पुरस्कार।
2. 50 तथा अधिक अंक लाने वाले सभी परीक्षार्थियों को पुरस्कृत किया जायेगा।

जैनागम स्तोक वारिधि
(थोकड़ों का पाठ्यक्रम)

प्रथम कक्षा-	25 बोल, 67 बोल, सुपच्चक्खाण- दुपच्चक्खाण, संज्ञा, सवणे नाणे
द्वितीय कक्षा-	कर्म प्रकृति, गति-आगति, चौदह गुणस्थान का बासठिया, रूपी-अरूपी, उपयोग
तृतीय कक्षा-	नवतत्त्व, जयन्तीबाई, भवभ्रमण, श्वासोच्छ्वास, श्रमण निर्ग्रन्थों के सुख की तुल्यता
चतुर्थ कक्षा-	समिति-गुप्ति, ज्ञान लब्धि, 32 बोल का बासठिया, पाँच देव, छोटी गतागत
पाँचवीं कक्षा-	लघुदण्डक, गुणस्थान, द्रव्येन्द्रिय, आठ आत्मा, असंयत भव्य द्रव्य देव
छठी कक्षा-	अबाधाकाल, 98 बोल का बासठिया, विरह, दिशाणुवाई, छः काय
सातवीं कक्षा-	47 बोल की बन्धी, जीव पज्जवा, अजीव पज्जवा, 256 राशि, 50 बोल की बन्धी
आठवीं कक्षा-	जीवधड़ा, 102 बोल का बासठिया, आहार पद, आत्मारंभी, छः भाव
नवमीं कक्षा-	सर्वबन्ध-देशबन्ध, नियण्ठा, संजया, 800 बोल की बन्धी, पदवी
दसवीं कक्षा-	काय स्थिति, भाषा पद, पुद्गल परावर्तन, मड़ाई अणगार, सिद्धों का थोकड़ा
ग्यारहवीं कक्षा-	नय निक्षेप आदि, 24 तीर्थंकरों का लेखा, इरियावही बंध, समवशरण, केवली समुद्घात
बारहवीं कक्षा-	गमा, अवधिज्ञान, स्वप्नों का थोकड़ा, छह आरा, सप्रदेशी-अप्रदेशी

वरीयता पुरस्कार

Prize	Class 1-4	Class 5-8	Class 9-12
1st Prize	2000/-	2500/-	4000/-
2nd Prize	1500/-	2000/-	3000/-
3rd Prize	1000/-	1500/-	2000/-
4th to 10th Prize	500/-	750/-	-

50 तथा अधिक अंक लाने वाले सभी परीक्षार्थियों को पुरस्कृत किया जायेगा।

Visit us at : www.jainratnaboard.com